सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की हिन्दी गृहपत्रिका

सेन्ट्रल मंथन

केवल आंतरिक परिचालन हेतु

• खंड 8 • अंक - 2 • जून, 2023

भारतीय संस्कृति

विशेष आकर्षण- एमएसएमई

G20 भारत 2023 INDIA

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India

1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

मुंबई महानगर आंचलिक कार्यालय द्वारा आयोजित टाउन हॉल मीटिंग में हमारे प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम.वी. राव का स्वागत करते हुए मुंबई अंचल के अंचल प्रमुख श्री अश्विनी धींगड़ा.

मुंबई महानगर आंचलिक कार्यालय द्वारा आयोजित टाउन हॉल मीटिंग को संबोधित करते हुये हमारे प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम.वी. राव.

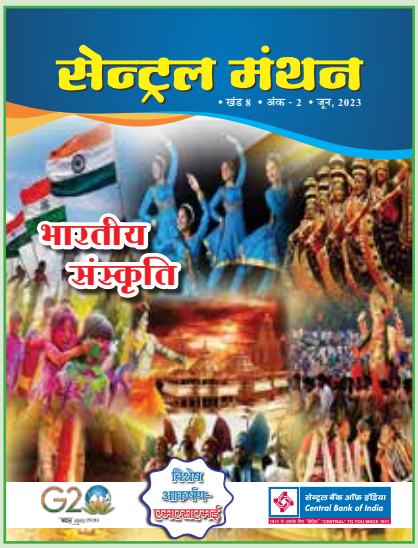

प्रधान संरक्षक

श्री एम. वी. राव
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

संरक्षक

श्री विवेक वाही
कार्यपालक निदेशक

श्री एम. वी. मुरली कृष्णा
कार्यपालक निदेशक

उप संरक्षक

सुश्री पोपी शर्मा
महाप्रबंधक (मासंवि / राजभाषा)

संपादक

श्री राजीव वार्ष्णेय
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

सहायक संपादक

श्री संजय भट्ट

सुश्री अनिता धुर्वे

श्री सुनील कुमार साव

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही हिन्दी गृह-पत्रिका

(केवल आंतरिक परिचालन हेतु)

प्रकाशन तिथि : 14 अगस्त 2023 • खंड 8 • अंक - 2 • जून, 2023

विषय-सूची

▶ प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री एम.वी. राव का संदेश 2

▶ कार्यपालक निदेशक, श्री विवेक वाही का संदेश 3

▶ कार्यपालक निदेशक, श्री एम वी मुरली कृष्ण का संदेश 4

▶ महाप्रबंधक (राजभाषा) का संदेश 5

▶ संपादकीय 6

▶ एको अहं, द्वितीयो नास्ति, न भूतो न भविष्यति 7

▶ आत्मनिर्भर भारत - एमएसएमई क्षेत्र की उपयोगिता 9

▶ भारतीय संस्कृति (एम एस एमई) 11

▶ भारतीय संस्कृति: विविधता में एकता 12

▶ भारतीय संस्कृति के उपादान 14

▶ फिरोजपुर बॉर्डर की यात्रा 16

▶ हास्य कविता : माडर्न पत्नी की व्यथा 17

▶ भारतीय संस्कृति का विहंगावलोकन - पुरी का जगन्नाथ मंदिर 18

▶ भारत की अभेद संस्कृति 21

▶ बिहू 23

▶ छत्तीसगढ़ राज्य में बस्तर जिले की आदिवासी संस्कृति और विरासत 25

▶ भारतीय संस्कृति 29

▶ एमएसएमई (सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग) 30

▶ भारतीय संस्कृति 31

▶ भारतीय संस्कृति विशेष आकर्षण - एम एस एम ई 33

▶ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन की कुछ झलकियां 37

▶ राजभाषा गतिविधियां 38

ई-मेल/Email : centralmanthan@centralbank.co.in

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार अनिवार्यत: बैंक के नहीं हैं.

डिज़ाइन, संपादन तथा प्रकाशन : राजीव वार्ष्णेय, सहायक महाप्रबंधक-राजभाषा, एम.जी.रोड, फोर्ट, मुंबई - 400 023 के लिए तथा उनके द्वारा उचीथ ग्राफिक प्रिंटर्स प्राईवेट लिमिटेड. आइडियल इंडस्ट्रीयल इस्टेट, मथुरादास मिल्स कंपाऊंड, सेनापती बापट मार्ग, लोअर परेल, मुंबई - 400 013.

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री एम.वी. राव का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

सर्वप्रथम मैं आप सभी को स्वतंत्रता दिवस एवं अन्य पर्वों सहित जून 2023 तिमाही के लिए हमारे बैंक के शानदार परिणामों के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूं.

वित्तीय वर्ष 2023-24 की पहली तिमाही में हमारा कामकाज बेहतर रहा है. अब आप सबको प्रगति की गति बढ़ानी होगी. नए वित्त वर्ष के लक्ष्य सभी को आबंटित किए जा चुके हैं. मुझे पूर्ण विश्वास है कि सभी अंचल प्रमुख, क्षेत्रीय प्रमुख एवं शाखा प्रबंधक अपने सभी लक्ष्यों को बड़े मार्जिन से प्राप्त करने की कार्य नीति बना चुके होंगे और उसके अनुसार कार्य कर रहे होंगे. ध्यान रखिए, बैंक की प्रगति के लिए व्यवसाय में वृद्धि आवश्यक है. व्यवसाय में वृद्धि के लिए हमारी ग्राहक सेवा उत्कृष्ट होनी आवश्यक है. अपने ग्राहकों एवं शाखा में आने वाले सभी व्यक्तियों के साथ आप बहुत अच्छा व्यवहार करें और भारतीय संस्कृति के अनुसार 'अतिथि देवो भव:' अर्थात हमारे परिसर में आने वाला हर व्यक्ति हमारे लिए अतिथि है. एवं अतिथि देवता समान होते हैं. अत: हर आने वाले के साथ सम्मानजनक व्यवहार करें. आज हमारे बैंक के पास समाज के हर वर्ग के लिए जमा एवं ऋण उत्पाद उपलब्ध है. आप ग्राहक की आवश्यकता के अनुसार उन्हें अपना उत्पाद प्रस्तुत करें. आप रैम अर्थात रिटेल कृषि एवं एमएसएमई पर विशेष फोकस कीजिए. यह उत्पाद हमारे बैंक का व्यवसाय बढ़ाने के साथ-साथ देश की जीडीपी वृद्धि में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं.

व्यवसाय बढ़ाने के लिए आवश्यक है कि प्राप्त ऋण आवेदनों पर हमारा टीएटी(टर्नअराउंड टाइम) निर्धारित समय के अंतर्गत रहे. ऋण आवेदनों की स्वीकृति में अनावश्यक विलंब न करें. इसके साथ यह भी आवश्यक है कि ऋणों की गुणवत्ता के साथ भी कोई समझौता न करें.

आप अपने अंचल, क्षेत्र, शाखा का एनपीए निरंतर घटाते हुए शून्य स्तर पर लाने का प्रयास करें. उधारकर्ताओं से नियमित संपर्क करें और ऋणों की वसूली का हर संभव प्रयास करें.

बेहतर परिणामों के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक यूनिट एक टीम के रूप में काम करे. टीम का लीडर सबको साथ लेकर चले और टीम का हर सदस्य अपनी भूमिका का उत्कृष्ट तरीके से निर्वहन करे. बेहतर तालमेल से कार्य करने का परिणाम हमेशा उत्कृष्ट होता है.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(एम. वी. राव)
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

कार्यपालक निदेशक, श्री विवेक वाही का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

जून 2023 की तिमाही में हमारे बैंक के अच्छे वित्तीय परिणामों के लिए मैं आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूं और अपने माननीय एमडी एवं सीईओ श्री एम वी राव के विजनरी निर्णय और कुशल नेतृत्व के लिए उन्हें हार्दिक धन्यवाद देता हूं.

हमारा प्रिय भारत देश सांस्कृतिक रूप से अत्यंत समृद्ध है. यहां अनेक धर्म, अनेक भाषा-भाषी, अनेक तरह की वेशभूषा वाले नागरिक प्रसन्नतापूर्वक एक साथ रहते हैं. भारत में तरह-तरह के पर्व और त्योहार मनाए जाते हैं. पूरा विश्व भारतीय संस्कृति से प्रभावित होता है.

हमारा प्रिय सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया भारत की संस्कृति का उत्कृष्ट उदाहरण है. हमारे कर्मचारी और ग्राहकों में सभी धर्म, क्षेत्र, भाषा और वेशभूषा वाले नागरिकों का समावेश है. हमारी शाखाएं देश के हर भाग में हैं और आप सब भारतीय संस्कृति के अनुरूप शाखा परिसर में आने वाले हर व्यक्ति को सम्मान प्रदान करें. भारतीय संस्कृति में विनम्रता, शिष्टता बहुत महत्वपूर्ण है. इसलिए हमारा प्रत्येक सेन्ट्रलाइट शाखा में आने वाले हर व्यक्ति से सम्मानपूर्वक व्यवहार करे तथा उनकी पूछताछ का संतोषजनक उत्तर दे. उनकी समस्याओं का समाधान करे. आप जानते हैं कि ग्राहक हमारे लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है. इसलिए हमारे समस्त कर्मचारी प्रत्येक ग्राहक के साथ मधुर व्यवहार करें. उन्हें सर्वश्रेष्ठ ग्राहक सेवा प्रदान करें.

यह सभी जानते हैं कि व्यवसाय वृद्धि के लिए ग्राहक सेवा श्रेष्ठ होना आवश्यक है अर्थात् बेहतर ग्राहक सेवा से व्यवसाय वृद्धि होती है. हमारी अन्य योजनाओं की भांति एमएसएमई सेक्टर के लिए भी ऋण योजनाएं हैं. एमएसएमई सेक्टर भारत के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है. शाखाएं, क्षेत्र, अंचल एमएसएमई पर पूरा ध्यान दें तथा इस क्षेत्र के लिए दिए गए सभी लक्ष्यों को प्राप्त करें.

आने वाले पर्वों के लिए हार्दिक शुभकामनाएं सहित.

(विवेक वाही)
कार्यपालक निदेशक

कार्यपालक निदेशक, श्री एम वी मुरली कृष्ण का संदेश

प्रिय सथियो,

सर्वप्रथम आगामी पर्वों हेतु हार्दिक शुभकामनाएं.

जो उत्तर में विराट हिमालय से प्रारम्भ होकर, दक्षिण में तीन सागरों के संगम तक विशाल भू-भाग में बसता है, वह हमारा भारत देश अपनी अनूठी संस्कृति के लिए पहचाना जाता है. जो पूर्व में उगते सूर्य की धरती से प्रारम्भ होकर कच्छ के रण तक अपने अंदर विभिन्न संस्कृतियों का अद्भुत संयोजन रखता है.

भारत के पर्व एवं त्योहार विभिन्न रंगों के मिश्रण होते हैं, उत्साह और उमंग से भरपूर होते हैं. भारतीय त्योहारों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि पर्व किसी का भी हो किंतु मनाते सब उसे मिलकर हैं, यही भारतीय संस्कृति का महत्व है.

हमारा प्रिय सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया भी भारतीय संस्कृति का एक उत्कृष्ट उदाहरण है. हमारे बैंक की शाखाएं अलग-अलग भाषाभाषी तथा अलग- अलग प्रकार की रीति और परम्परा वाले क्षेत्रों में कार्यरत हैं. हमारे कर्मचारियों में भी विभिन्न समुदायों, धर्मों एवम भाषा भाषी सदस्यों का समावेश है. इस क्रम में विभिन्न धर्मों, भाषाओं, समुदायों के नागरिक हमारे ग्राहक हैं. सभी सेन्ट्रलाइट भारतीय संस्कृति के अनुरूप अपने ग्राहकों से व्यवहार करें उन्हें अपने परिवार का ही सदस्य समझकर व्यवहार करें, उनकी मान्यताओं, परम्पराओं, धर्मों एवम भाषाओं का सम्मान करें, जिससे विविधता में एकता प्रदर्शित होती है. याद रखें हमारे व्यवसाय की वृद्धि हेतु उत्कृष्ट ग्राहक सेवा प्रदान करने के लिए सभी साइबर क्षेत्रों में डिजिटल अपनाना आवश्यक है. जबकि भारतीय संस्कृति हमें उत्कृष्ट ग्राहक सेवा हेतु प्रेरित करती है.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(एम वी मुरली कृष्ण)
कार्यपालक निदेशक

महाप्रबंधक (राजभाषा) का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

अभी-अभी समाप्त जून 2023 के तिमाही में माननीय एमडी एवं सीईओ श्री एम वी राव के कुशल नेतृत्व में हमारे शानदार कामकाजी परिणामों के लिए मैं आप सभी को हार्दिक बधाई देती हूं.

प्राचीन काल से ही हमारी भारतीय संस्कृति विश्वभर के आकर्षण का केंद्र रही है. परिणामस्वरुप शताब्दियों से भारतीय संस्कृति का आकर्षण विदेशी नागरिकों को निरंतर अपनी ओर खींचता रहा है. यहां जो भी आया वह यहीं का होकर रह गया. इसके फलस्वरूप वर्तमान भारत आज सांस्कृतिक विविधताओं वाला राष्ट्र बन चुका है. तरह-तरह के उत्सव, त्योहार, मेले इत्यादि यहां आयोजित होते रहते हैं जो इस समावेशी संस्कृति के भिन्न-भिन्न रंगों को बहुत सुंदर तरीके से प्रस्तुत करते हैं.

हम बैंक कर्मचारी के रूप में भी भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग हैं. सबसे प्रेम पूर्ण व्यवहार हमारा सहज मानवीय स्वभाव होता है. एक व्यवसायिक बैंक के लिए यह आवश्यक है कि उसके कर्मचारी अपने ग्राहकों से मधुर व्यवहार करें. ग्राहकों के साथ अच्छा व्यवहार बैंक को प्रगति के पथ पर आगे ले जाने का सबसे बड़ा माध्यम होता है.

प्रत्येक कर्मचारी यह ध्यान रखे कि व्यवहार में कमी, सेवा में कमी मानी जाती है जिससे ग्राहक शिकायत करने को बाध्य हो जाता है, जिसके फलस्वरुप कर्मचारी परेशानी में पड़ता है. ग्राहकोंम प्रदत्त सेवा में कमी, अनुशासनहीनता मानी जाती है. अनुशासनहीनता के फलस्वरुप कर्मचारी को अन्य प्रशासनिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है.

प्रत्येक कर्मचारी एक भारतीय होने के नाते भारतीय संस्कृति के अनुरूप व्यवहार करे. भारतीय संस्कृति के अनुरूप आगंतुकों को चाहे वह ग्राहक हो या ना हो, सौजन्यपूर्ण व्यवहार करे, विनम्रता पूर्वक बात करे, तो निश्चय ही बैंक की प्रगति में वह अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देंगे.

हार्दिक शुभकामनाएं.

(पॉपी शर्मा)
महाप्रबंधक - राजभाषा

संपादकीय

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

आगामी पर्वों एवं त्योहारों की हार्दिक शुभकामनाएं !

पर्वों और त्योहारों का देश भारत अपनी सांस्कृतिक विरासत के लिए विश्व में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है. भारत की संस्कृति अद्भुत है, अनूठी है, अद्वितीय है. यहां अनेको भाषाएं बोली जाती हैं. यहां अलग-अलग धर्म को मानने वाले नागरिक रहते हैं. यहां के नागरिक भिन्न-भिन्न प्रकार की पोशाक पहनते हैं. अनेकों लोग विभिन्न प्रकार की मान्यताओं को मानते हैं. यहां अनेकों प्रथाएं प्रचलित है. सुखद आश्चर्य है कि इतनी विविधताओं के होते हुए भी भारतीयों के मध्य सौहार्दपूर्ण वातावरण के साथ अटूट एकता का बंधन है.

सकल विश्व को शांति और अहिंसा का संदेश देने वाला भारत राष्ट्र दुनिया के किसी अन्य राष्ट्र पर कभी भी हमलावर नहीं हुआ. किसी देश पर आक्रमण नहीं किया. किसी की भूमि पर कब्जा नहीं किया. यहां तक कि भारत ने अपने यहां दूसरे देशों से आने वाले और अपना अलग-अलग धर्म मानने वाले नागरिकों को बसने और फलने फूलने दिया. यही कारण है कि भारत में सभी धर्मों को मानने वाले व्यक्ति अपनी धार्मिक मान्यताओं का अनुसरण करते हुए अपने-अपने पर्वों को उल्लासपूर्वक मनाते हैं. वास्तव में देखा जाए तो भारत की संस्कृति सत्य, अहिंसा, न्याय, प्रेम, दया, उपकार और सहिष्णुता का अद्भुत संयोजन है. भारतीय संस्कृति में अपने यहां आने वाले व्यक्ति को आदर और सम्मान प्रदान किया जाता है. संभवत: इसी कारण दीर्घकालीन विदेशी शासन के अधीन रहने के बाद भी भारत और भारतीय संस्कृति का अस्तित्व बना हुआ है. किसी ने ठीक ही लिखा है-

यूनान मिश्र रोम सब मिट गए जहां से
बाकी मगर है अब तक नामो निशां हमारा
कुछ बात है कि हस्ती, मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन, दौर ए जहां हमारा.

शुभकामनाओं सहित,

राजीव वार्ष्णेय
सहायक महाप्रबंधक - राजभाषा

आज़ादी का अमृत महोत्सव

एको अहं, द्वितीयो नास्ति, न भूतो न भविष्यति

- अमनदीप कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक, मैंगलोर शाखा
क्षेत्रीय कार्यालय, हुबली

भारतीय संस्कृति एक बहुमूल्य और प्राचीन संस्कृति है जो भारतीय महाद्वीप के विभिन्न हिस्सों में विकसित हुई है। इसकी विशेषताएं, भाषा, धार्मिक विचारधारा, कला, संगीत, नृत्य, शास्त्र, दर्शन, लोकतांत्रिक पद्धति, खान-पान और परिवारिक संबंधों में प्रकट होती हैं। यह संस्कृति करीब 5,000 वर्षों से अधिक का इतिहास रखती है और भारतीय जीवन और दैनिक गतिविधियों में गहरी रूप से प्रभावशाली रही है।

भारतीय संस्कृति का मूल मूल्य विचारधारा "वसुधैव कुटुम्बकम" है, जिसका अर्थ है "पूरी पृथ्वी एक परिवार है"। यह विचारधारा सभी मनुष्यों के बीच एकात्मता और सामरस्य के आदर्श को प्रोत्साहित करती है। इसके अलावा, भारतीय संस्कृति में अन्य महत्वपूर्ण सिद्धांत शांति, सत्य, न्याय, धर्म, स्वास्थ्य, शिक्षा, कर्मयोग, भक्ति, और आत्म-प्रतिष्ठा शामिल हैं।

भारतीय संस्कृति विभिन्न कालों, युगों, और क्षेत्रों में विकसित हुई है। इसमें हिंदू धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, सिख धर्म, और अन्य धार्मिक सम्प्रदायों के आदर्श, तत्व, और रीति-रिवाज़ शामिल हैं। कथानकों, काव्य, संगीत, नृत्य, कला, वास्तुकला, संगणकला, ज्योतिष, योग, आयुर्वेद, वाणिज्यिक गतिविधियां, और अन्य क्षेत्रों में भारतीय संस्कृति अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है।

भारतीय संस्कृति में परंपरागत तौर पर गुरु-शिष्य परम्परा को महत्व दिया जाता है, जहां ज्ञान की प्राप्ति और संचार पूर्वजों से गुरु के माध्यम से होता है। धार्मिक और आध्यात्मिक ज्ञान, कला और विज्ञान, और अन्य क्षेत्रों में गुरु के शिष्य को उच्चतर स्तर तक ले जाने का प्रयास किया जाता है।

कला, संगीत, और नृत्य भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। भारतीय कला में विविधता और रंगीनता है, जो भारतीय जीवन की जटिलताओं और अनुभवों को प्रकट करती है। भारतीय संगीत क्लासिकल और लोक संगीत के रूप में प्रस्तुत होता है और अलाप, ताल, राग और तालमेल को महत्व देता है। भारतीय नृत्य भी विविध है और कथक, भरतनाट्यम, ओड़िसी, कुच्चीपुड़ी, मोहिनीअट्टम, कथा नृत्य और लावनी जैसे आदर्शों को प्रस्तुत करता है।

भारतीय संस्कृति में परिवार और समाज का महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय परिवार प्रणाली में पीढ़ीवाद और पारंपरिक मूल्यों का महत्व होता है। इसके अलावा, विवाह, जन्म, मृत्यु, त्यौहार, और सामाजिक समारोहों में रंगबिरंगी परंपराएं और रीति-रिवाज हैं, जो भारतीय संस्कृति की अनोखी पहचान हैं।

भारतीय संस्कृति का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलु भाषाओं, साहित्य, कला और वास्तुकला का विकास है। संस्कृत और हिंदी जैसी भाषाएं भारतीय संस्कृति की मुख्य भाषाओं में से हैं, जबकि राजस्थानी, गुजराती, मराठी, बंगाली, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, पंजाबी और अन्य राजकीय भाषाएं भी महत्वपूर्ण हैं। संस्कृत साहित्य, महाभारत, रामायण, गीत गोविंद, पञ्चतंत्र, कालिदास की कृतियाँ, तुलसीदास की रामचरितमानस, रवींद्रनाथ टैगोर की कविताएं, प्रेमचंद की कहानियाँ और रवींद्रनाथ टैगोर के नाटक जैसी महत्वपूर्ण रचनाएं हैं।

वर्तमान समय में, भारतीय संस्कृति का विकास कई पहलुओं पर आधारित है:

सांस्कृतिक प्रतिष्ठा का सत्ताईकरण: भारत में संस्कृति और परंपरा को महत्व देने की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण चेतना का विकास हुआ है। भारतीय संस्कृति को आधारभूत संरचनाओं,

धार्मिक स्थलों, परंपरागत उत्सवों, नृत्य और संगीत के माध्यम से संजीवित किया जा रहा है।

सांस्कृतिक सम्पदा का संरक्षण: भारत सरकार ने संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन के लिए कई पहलुओं को शुरू किया है। इनमें से कुछ उदाहरण हैं - राष्ट्रीय संस्कृति योजना, राष्ट्रीय संस्कृति संग्रहालय, सांस्कृतिक विरासत मंत्रालय, और पर्यटन मंत्रालय द्वारा सांस्कृतिक स्थलों के प्रबंधन और प्रदर्शन का समर्थन।

शिक्षा के माध्यम से प्रशंसा: शिक्षा के क्षेत्र में भी भारतीय संस्कृति को विकसित करने के लिए कई कदम उठाए गए हैं। भारत में संस्कृत विश्वविद्यालयों और संस्थानों के साथ-साथ विभिन्न शिक्षा संस्थानों में संस्कृत अध्ययन को प्रोत्साहित किया जाता है। संस्कृत भाषा, साहित्य, दर्शन और कला के पाठ्यक्रम भी आमतौर पर शामिल हैं।

संस्कृति के माध्यम से देश का प्रतिनिधित्व: विभिन्न कार्यक्रमों, महोत्सवों, और अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व किया जाता है। ये कार्यक्रम और महोत्सव भारतीय नृत्य, संगीत, विरासत, भोजन, वस्त्र और कला को प्रमोट करते हैं।

भारतीय संस्कृति की अंतर्राष्ट्रीय मान्यता: भारतीय संस्कृति विश्व भर में महत्वपूर्ण मान्यता प्राप्त कर रही है। योग, आयुर्वेद, मेधावी गणित, भारतीय कला और संगीत की प्रशंसा विभिन्न देशों में हो रही है। इससे भारतीय संस्कृति का विकास और प्रशंसा अधिक हो रही है।

इन सभी पहलुओं के साथ साथ भारतीय संस्कृति आज के समय में भी अपनी गहरी रूपरेखा बनाये हुए है।

भारतीय संस्कृति विश्व के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसका आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, और ऐतिहासिक महत्व व्यापक है। यह विश्व को उत्साह, सद्भाव, धार्मिकता, और संयम का सन्देश देती है।

नाम - मालती कुरिल

शाखा - धोबीघाट, जबलपुर

क्षेत्रीय कार्यालय - जबलपुर

पीएफ़ संख्या - 087868

पद - दफ्तरी

ईमानदारी का परिचय देते हुये जबलपुर क्षेत्र के धोबीघाट शाखा की दफ्तरी श्रीमति मालती कुरिल ने शाखा परिसर में लॉकर के पास मिले ग्राहक के हार को शाखा व बैंक के सुपुर्द करते हुये एक बेहतर व ईमानदार कर्मचारी की मिसाल पेश की है. श्रीमति कुरिल के इस कदम ने बैंक के बेहतर छवि को प्रदर्शित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है. बैंक इनके ईमानदारी व कर्तव्यनिष्ठा की सराहना करता है. उक्त आभूषण से संबंधित ग्राहक को बुलाकर हार को उनके सुपुर्द किया गया.

सेन्ट्रलाइट परिवार आपकी ईमानदारी एमं सत्यनिष्ठा की सराहना करता है.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आत्मनिर्भर भारत - एमएसएमई क्षेत्र की उपयोगिता

कविता ठाकुर
महाप्रबंधक
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया
आंचलिक कार्यालय अहमदाबाद

आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना : आत्मनिर्भर शब्द आत्म और निर्भर से मिलकर बना है जिसका अर्थ स्वावलंबन है अर्थात् हम स्वयं को इतना सक्षम बनायें कि दूसरों पर निर्भर न रहना पड़े. आत्मनिर्भर भारत उस समय सुर्खियों में आया, जब कोरोना संकट से त्रस्त अर्थव्यवस्था को उबारने के लिए प्रधानमंत्री ने 13 मई 2020 को बीस लाख करोड़ रूपये के प्रोत्साहन पैकेज की घोषणा की और भारत को आत्मनिर्भर बनाने का आह्वान किया. उन्होंने इसी अवसर पर लोकल के लिए वोकल का नारा भी दिया.

यद्यपि आत्मनिर्भर भारत का यह नया दौर है परंतु इसकी अवधारणा काफी पुरानी है. रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास का कथन पराधीन सपनेहुं सुख नाहीं वस्तुत: आत्मनिर्भरता की ही बात करता है.

वर्ष 1905 में बंग भंग के दौरान चलाए गए स्वदेशी आंदोलन का स्वदेशी भी देश में निर्मित वस्तुओं के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के बारे में था जो एक प्रकार से स्वावलंबन की ही परिकल्पना थी. महात्मा गांधी आर्थिक स्वायत्ता को राजनैतिक स्वाधीनता की कुंजी मानते थे. उनका मानना था कि भारत के निर्माताओं के समक्ष दो रास्ते हैं - अधिकाधिक उत्पादन करना और अधिकाधिक लोगों द्वारा उत्पादन करना. पहला रास्ता एक नई आर्थिक गुलामी की ओर ले जाएगा और दूसरा हमें आर्थिक आत्मनिर्भरता के पथ पर अग्रसर करेगा. उन्होंने हिंद स्वराज में आर्थिक स्वायत्ता की प्रमुखता से पैरवी की थी. उनका चरखा भी एक तरह से आत्मनिर्भरता का ही प्रतीक था जो विदेशी वस्त्रों के बजाय स्वदेशी खादी को अपनाने का मंत्र देता था.

प्रधानमंत्री के आत्मनिर्भर भारत की घोषणा का आशय देश में ही साधन तथा संसाधन विकसित करने और देशी उत्पादों का प्रयोग अधिक करने की ओर था, ताकि स्थानीय उत्पादकों को प्रोत्साहन मिले, लोगों को रोजगार मिले और आयात पर व्यय होने वाली हमारी बहुमूल्य विदेशी मुद्रा बचे. कोरोना संकट और सरहद पर चीन के साथ तनातनी के बीच आत्मनिर्भर भारत के घोषणा का समय बहुत माकूल था और इसने राष्ट्रभक्ति की एक नई अलख जगाने का भी काम किया. जब हम भारत को आत्मनिर्भर बनाने की बात करते हैं तो इसका आशय बहिष्कारवाद या अलगाववाद नहीं है, बल्कि अपनी क्षमता और कौशल का इस तरह से निर्माण और विस्तार करना है जिससे कि विश्व स्तर पर अधिग्रहण करने वाली शक्तियों का मुकाबला किया जा सके. इस अभियान का आशय संपूर्ण आत्मनिर्भरता भी नहीं है क्योंकि प्राकृतिक संसाधनों के असमान वितरण के कारण यह व्यावहारिक रूप से संभव नहीं है.परंतु यह अवश्य संभव है कि जब हम रणनीतिक महत्व की वस्तुओं के मामले में आत्मनिर्भर हो जाएंगे तो अन्य देशों की हम पर निर्भरता अधिक होगी और इस स्थिति में हम जिन मामलों में आत्मनिर्भर नहीं भी हैं उनके बारे में हमारी मोलतोल की क्षमता अधिक होगी और विश्व का कोई भी देश हमें यूं ही नजरअंदाज नहीं कर पाएगा.

एमएसएमई अंग्रेजी के माइक्रो, स्मॉल एंड मीडियम एंटरप्राइजेस का संक्षेपित नाम है जिसे हिंदी में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम भी कहा जाता है. एमएसएमई को भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जाता है और इसे राष्ट्र के सामाजिक एवं आर्थिक विकास का वाहक कहा जाता है. एमएसएमई क्षेत्र सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय के अधीन आता है. यद्यपि पिछले सात दशक से एमएसएमई क्षेत्र अर्थव्यवस्था को गतिशील रखने और ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों के औद्योगिकीकरण के जरिए क्षेत्रीय असंतुलन को समाप्त करने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है. किंतु इसे विशिष्ट पहचान वर्ष 2006 में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम विकास अधिनियम 2006 के पारित होने के साथ मिली.

वर्तमान में, भारत के एमएसएमई क्षेत्र को मोटे तौर पर दो श्रेणियों अर्थात् विनिर्माण और सेवा उद्योग में वर्गीकृत किया गया है. संयंत्र एवं मशीनरी या उपकरण में किए गए निवेश के आधार पर ही इन्हें सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम के रूप में वर्गीकृत किया जाता है. अधिनियम के पारित होने के समय एमएसएमई वर्गीकरण के मानदण्ड विनिर्माण और सेवा इकाईयों के लिए अलग अलग थे तथा इनकी वित्तीय सीमा भी अपेक्षाकृत कम थी किंतु 13 मई 2020 को आत्मनिर्भर भारत पैकेज की घोषणा के समय एमएसएमई की परिभाषा को संशोधित करके विनिर्माण और सेवा इकाईयों के लिए समान मानदण्ड निर्धारित किए गए हैं. नई परिभाषा के अनुसार एमएसएमई को निम्नानुसार तीन प्रकार से परिभाषित किया गया है -

- सूक्ष्म उद्यम वे हैं जिनका संयंत्र एवं मशीनरी अथवा उपकरण में निवेश एक करोड़ रूपये से अधिक न हो तथा टर्नओवर पांच करोड़ रूपये से अधिक न हो.
- लघु उद्यम से आशय ऐसे उद्यमों से हैं जिनका संयंत्र एवं मशीनरी अथवा उपकरण में निवेश दस करोड़ रूपये से अधिक न हो और टर्नओवर पचास करोड़ रूपये से अधिक न हो.
- मध्यम उद्यम से आशय उन उद्यमों से है जिनका संयंत्र एवं मशीनरी अथवा उपकरण में निवेश पचास करोड़ रूपये से अधिक न हो और टर्नओवर दो सौ पचास करोड़ रूपये से अधिक न हो.

नई परिभाषा में निर्यात को टर्नओवर की गणना से बाहर रखा गया है. एमएसएमई को अधिक करने की प्राथमिक जिम्मेदारी राज्य सरकारों की होती है. तथापि, भारत सरकार भी विभिन्न उपायों के द्वारा राज्य सरकारों के प्रयासों को आगे करने का काम करती हैं.

आत्मनिर्भर भारत हेतु एमएसएमई क्षेत्र की उपयोगिता : किसी भी देश की आत्मनिर्भरता के लिए उसकी अर्थव्यवस्था की सतत वृद्धि नितांत आवश्यक है क्योंकि जितनी अधिक आर्थिक गतिविधियां होंगी, अर्थव्यवस्था का पहिया उतनी ही तेजी से आगे जावेगा. भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूती देने में एमएसएमई की अग्रणी भूमिका रही है.

उत्पादन को प्रोत्साहित करना : आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना मूलत: उत्पादन के मामले में आत्मनिर्भर बनने पर आधारित थी. यह वस्तुत: मेक इन इंडिया का परिवर्धित संस्करण है जिसका उद्देश्य भारत को मैन्यूफेक्चरिंग हब बनाना था. किसी भी देश की आत्मनिर्भरता के लिए उसका उत्पादन के मोर्चे पर पहले स्थान पर रहना बहुत जरूरी है क्योंकि इससे न केवल घरेलू मांग पूरी होती है अपितु वैश्विक मांग को भी पूरा किया जा सकता है.

निर्यात को प्रोत्साहित करना : जब हम आत्मनिर्भर भारत की बात करते हैं तो इसका तात्पर्य है कि हम आयात पर निर्भरता कम करें, निर्यात को अधिक करें. यदि हमें आयात करना भी हो तो कच्चे माल से तैयार माल बनाने और उसे पुनर्नियात करने के लिए करें निर्यात के मोर्चे पर भी एमएसएमई का योगदान है.

रोजगार को प्रोत्साहित करना : कृषि के बाद रोजगार उपलब्ध कराने वाला यदि कोई सबसे बड़ा क्षेत्र है तो वह एमएसएमई क्षेत्र है. भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश में हर किसी को रोजगार उपलब्ध करा पाना अकेले सरकार के लिए संभव नहीं है. एमएसएमई क्षेत्र कम पूंजी लागत पर रोजगार के प्रचुर अवसर उपलब्ध कराकर एक प्रकार से सरकार की रोजगार की मुहिम को ही आगे बढ़ा रहे हैं. सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ये स्थानीय स्तर पर रोजगार उत्पन्न करते हैं जिससे पलायन को रोकने में सहायता मिलती है. हाल ही में किये गये सर्वेक्षण के अनुसार एमएसएमई क्षेत्र द्वारा सृजित रोजगार में ग्रामीण क्षेत्र का हिस्सा पैंतालीस फीसदी था. लोगों को रोजगार मिलने से अर्थव्यवस्था को लाभ पहुंचता है. उदाहरण के लिए इससे जहां उत्पादक गतिविधियों को प्रत्यक्ष बढ़ावा मिलता है वहीं लोगों की आय का जरिया उत्पन्न होता है जिससे मांग को बढ़ावा मिलता है. मांग ही उत्पादन का आधार है. दूसरे रोजगार के कारण लोगों की रोटी, कपड़ा, मकान जैसी बुनियादी आवश्यकताओं के लिए सरकार पर निर्भरता घटती है. इसके कारण सरकार का वह पैसा जो भरण-पोषण जैसी अनुत्पादक गतिविधियों पर व्यय हो रहा होता है, रेल, सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य जैसे संरचनागत विकास कार्यों पर खर्च हो सकता है. मजबूत आधारभूत संरचना के बिना कोई भी देश आत्मनिर्भर नहीं बन सकता.

एमएसएमई क्षेत्र रोजगार के प्रचुर अवसर उपलब्ध कराकर परोक्ष रूप से आंतरिक शांति और भाईचारे को भी अधिक करता है. यदि लोगों के पास रोजगार और आय का जरिया नहीं होगा तो वे अराजक भी हो सकते हैं जिससे शांति और सुरक्षा के लिए खतरा पैदा हो सकता है. वहीं जिस देश में शांति और सुरक्षा होती है वहां लोग भयमुक्त होकर काम करते हैं और विदेशी निवेशकों के लिए भी ऐसे स्थल निवेश के पसंदीदा विकल्प होते हैं.

समावेशी विकास को बढ़ावा देना : आत्मनिर्भर भारत के निर्माण का सपना तभी साकार हो सकता है, जब विकास में सबकी भागीदारी हो. देश के स्वावलंबन के लिए लोगों का स्वावलंबी होना बहुत आवश्यक है. भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश, जहां 37.20 प्रतिशत लोग गरीबी रेखा से नीचे हों, में समावेशी विकास में एमएसएमई क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका है. वस्तुत: हर व्यक्ति में कोई न कोई हुनर अवश्य होता है परन्तु वित्त और उचित प्रशिक्षण के अभाव में वह इसे उद्यमिता में तब्दील नहीं कर पाता. चूँकि सूक्ष्म उद्यम कम लागत से शुरू किये जा सकते हैं और इन्हें सरकार द्वारा वित्तीय सहायता के साथ साथ उद्यमिता एवं कौशल विकास का प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाता है. अतएव, ये स्वरोजगार द्वारा स्वावलंबी बनने का सपना भी साकार करते हैं. उल्लेखनीय है कि कुल एमएसएमई में से 99 प्रतिशत सूक्ष्म उद्यम हैं, जो सीधे तौर पर स्वरोजगार को बढ़ावा दे रहे हैं.

महत्वपूर्ण बात यह है कि सूक्ष्म उद्यम आधी आबादी को भी विकासात्मक गतिविधियों का भागीदार बनाते हैं. भारत में अब से पचास वर्ष पहले तक महिलाओं की भूमिका केवल चौका, बर्तन और घरेलू कार्यों तक ही सीमित थी और कमाना केवल पुरुषों की जिम्मेदारी थी किंतु एमएसएमई क्षेत्र ने इस प्रथा को बदल दिया है. आज दूरदराज के गांवों में हस्तशिल्प, कताई, बुनाई, कढ़ाई,अचार, पापड़, अगरबत्ती, मोमबत्ती जैसे तमाम कार्यों में महिलाएं पुरुषों से बढ़कर भूमिका निभा रही हैं और अपनी आय से परिवार का खर्च उठा रही हैं. इससे जहां लैंगिक असमानता समाप्त हो रही है, वहीं आर्थिक स्वायत्ता को भी बढ़ावा मिल रहा है.

भारतीय संस्कृति (एम एस एमई)

बिनिता कुमारी साव
सहायक प्रबंधक-राजभाषा
क्षेत्रीय कार्यालय, ग्वालियर

भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति हैं। इसे विश्व की सभी संस्कृतियों की जननी माना जाता हैं। जीने की कला हो, विज्ञान हो या राजनीति का क्षेत्र भारतीय संस्कृति का सदैव विशेष स्थान रहा हैं। अन्य देशों की संस्कृतियाँ तो समय की धारा के साथ-साथ नष्ट होती रही हैं किंतु भारत की संस्कृति आदिकाल से ही अपने परंपरागत अस्तित्व के साथ अजर-अमर बनी हुई हैं। देश की संस्कृति जो इसका प्राण हैं, को अनदेखा करके यदि आर्थिक रूप से आगे बढेंगे तो केवल शरीर ही आगे बढेंगा और प्राण तो पीछे ही छूट जाएगा। अत: भारत की जो अस्मिता, उसकी पहचान हैं उसे साथ में लेकर ही आगे बढने की आज जरूरत हैं।

इसी आवश्यकता को केंद्र में रखते हुए भारत को विश्व गुरु बनाने की पहल में वर्ष 2006 में माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा देश के लोगों को भारतीय संस्कृति और स्वदेशी वस्तुओं के महत्व से अवगत कराने हेतु सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) पर विशेष जोर दिया गया। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में रीढ़ की हड्डी की तरह कार्य करती हैं। एमएसएमई के द्वारा न सिर्फ देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाया जा सकता है बल्कि विश्व स्तर पर भारतीय संस्कृति के प्रचार प्रसार को भी बढ़ाया जा सकता हैं। एमएसएमई के अंतर्गत आने वाले सभी उद्योग कहीं न कहीं भारतीय संस्कृति से जुड़े हुए हैं। भारत देश में लगभग 45% रोजगार छोटे उद्योगों के कारण मिलता हैं तथा भारत द्वारा निर्यात किये जाने वाले सामान का लगभग 50% सामान छोटे उद्योगों के द्वारा ही उत्पादित किया जाता हैं। इसलिए भारत सरकार चाहती हैं कि देश में अधिक से अधिक सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग खोले जाएं जिससे अधिक से अधिक रोजगार उत्पन्न हो सके।

वर्तमान में देश में सक्रिय लगभग 6.3 करोड़ एमएसएमई न सिर्फ देश की जीडीपी में एक बड़ा योगदान देते हैं बल्कि ये एक बड़ी आबादी के लिये रोजगार के अवसर उपलब्ध कराते है। गौरतलब हैं कि यह क्षेत्र लगभग 110 मिलियन रोजगार उपलब्ध कराने के साथ श्रमिक बाजार की स्थिरता में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं। ऐसे में सरकार द्वारा वर्तमान में आत्मनिर्भर भारत अभियान पर विशेष जोर दिये जाने के साथ ही भारत की अर्थव्यवस्था तथा आर्थिक रणनीति की दृष्टि से एमएसएमई की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो गई हैं। इन सूक्ष्म और लघु व्यवसायों का हमारी अर्थव्यवस्था में दोहरा महत्व हैं- पहला, ये उद्यम स्थानीय समुदायों की सांस्कृतिक वस्तुओं की मांग को पूरा करके सदियों पुरानी परंपराओं को संरक्षित करते हैं। ऐसे सांस्कृतिक सामान आधारित एमएसएमई स्थानीय समुदायों को हर मौसम में रोजगार प्रदान करके स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं का समर्थन करते हैं।

ऐसी मांगों से उत्पन्न रोजगार के अवसरों की एक श्रृंखला स्थानीय रूप से उपलब्ध कच्चे माल की निकासी, सांस्कृतिक वस्तुओं के निर्माण और उन्हें स्थानीय खुदरा बाजारों और मेलों में बेचने की ओर ले जाती हैं। इस भूमि में हर किसी को देने के लिए कुछ न कुछ हैं। सर्वोत्कृष्ट सांस्कृतिक संपत्तियों और क्षेत्रीय विशिष्टताओं की प्रचुरता का उपयोग करते हुए भारत में छोटे पैमाने के व्यवसाय स्थायी रूप से अत्यधिक विभेदित और अति स्थानीयकृत बाजारों को लक्षित करके फलते फूलते हैं। भारत में एमएसएमई के पास एक मजबूत क्षेत्रीय और सांस्कृतिक अंतर्निहितता हैं। संस्कृतियों की विविधता को देखते हुए भारत में प्रत्येक क्षेत्र का अपना विशिष्ट भोजन, कपड़ा और शिल्प हैं, जो अत्यधिक विभेदित उत्पादों की मांग पैदा करता हैं जिन्हें उन क्षेत्रों से संबंधित सूक्ष्म और लघु व्यवसायों द्वारा पूरा किया जा सकता हैं। उदाहरण के लिए, उत्तर पूर्वी राज्य नागालैण्ड में मनाए जाने वाले हॉर्नबिल उत्सव में, भाग लेने वाली प्रत्येक जनजाति की अपनी अलग-अलग सांस्कृतिक वस्तुएँ होती हैं, जो कई छोटे उद्यमों को व्यवसाय के अवसर प्रदान करती हैं। ओडिसा, बिहार और राजस्थान क्षेत्रों में पट्टचित्र, मधुबनी और फड़ कला रूपों के लोक कलाकार, रंगों और जैविक पेंटिंग सतहों के लिए स्थानीय रूप से प्राप्त प्राकृतिक रंगों पर भरोसा करते हैं। ये व्यवसाय बड़े रोजगार के अवसरों और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के साथ आत्मनिर्भर टिकाऊ अर्थव्यवस्था बनाने में योगदान देते हैं। भारत में खाद्य संस्कृति भी अपने आप में एक बहुत विस्तृत क्षेत्र है। हर देश की अपनी अपनी खाद्य संस्कृति होती हैं। भारत तो इस मामले में पूरे विश्व में सबसे धनी देश हैं। हमारे यहाँ पुरातन काल से देश के हर भाग की, हर प्रदेश की, हर गांव की, हर जाति की अपनी अपनी खाद्य संस्कृति हैं, इसको हम पूरे विश्व में प्रमोट कर सकते हैं। भारत में मनाए जाने वाले उत्सवों जैसे दीपावली, दुर्गा पूजा, 15 अगस्त इत्यादि देश की संस्कृति का हिस्सा हैं। इन उत्सवों जैसे दीपावली में बनाए जाने वाले मिट्टे के दिये, खिलौने तथा 15 अगस्त में बनने वाले झण्डे इत्यादि हमारी संस्कृति के साथ साथ लघु उद्योगों को बढावा देते हैं जिससे सांस्कृतिक विकास के साथ साथ लघु उद्योगों को बढावा मिलता हैं तथा रोजगार के अवसर उपलब्ध होते हैं। इन लघु और सूक्ष्म उद्योगों के माध्यम से महिलाओं के लिए भी रोजगार के अवसर उपलब्ध होते हैं । अब महिलाएँ अपने परिवार और घर की देखभाल के साथ साथ जीविकापर्जन भी कर रही हैं जो देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण पहल हैं। सूक्ष्म और लघु उद्यमों का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू अपने उत्पादों के विपणन में उनकी गतिशीलता हैं। जैसा कि उल्लेख किया गया हैं, आदिवासी उद्यमियों ने अपनी पारंपरिक कला में नवीनता लाई हैं जैसा कि कपड़ा आधारित गोदना कला के उपयोग के मामले में हैं। भारत में प्रसिद्ध खादी उद्योग, हतकरघा उद्योग, बांस से बनी विभिन्न सामाग्री, हस्त शिल्प इत्यादि भारतीय संस्कृति के साथ साथ लघु उद्योगों को भी बढ़ावा मिल रहा हैं।

एमएसएमई भारत में नए प्रतिभाओं के लिए वरदान हैं। ये स्थानीय परंपराओं और कला को जीवित रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। देश के मजबूत आर्थिक भविष्य के लिये एमएसएमई के विकास को प्राथमिकता देना अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इससे न सिर्फ भारतीय संस्कृति का विश्व स्तर पर महत्व बढेगा बल्कि भारत एक उभरती हुई महाशक्ति के रूप में बदलने में एमएसएमई की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हैं.

भारतीय संस्कृतिः विविधता में एकता

- सुनील कुमार साव
सहायक प्रबंधक- राजभाषा
केंद्रीय कार्यालय, मुंबई.

अनेकता में एकता ही हमारी शान है,
इसलिए हमारा भारत देश महान है.

भारतवर्ष विश्व का एकमात्र ऐसा देश है जिसके बारे में कहा जाता है- 'कोस कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बानी'. यहां पग-पग पर बोलियां बदल जाती हैं, भाषा, वेशभूषा, पकवान, रीति रिवाज, त्योहार बदल जाते हैं. अनेकों गौरवशाली मान्यताओं एवं समन्वय की संस्कृति से निर्मित हुई है भारतीय संस्कृति. अत: भारतीय संस्कृति के मर्म को चंद मुठ्ठी भर शब्दों में नहीं पिरोया जा सकता. भारतीय संस्कृति अर्थात तुलसीदास के समन्वय के दृष्टिकोण की संस्कृति, भारतीय संस्कृति अर्थात बुद्ध की अहिंसा, दया एवं करुणा की संस्कृति, भारतीय संस्कृति अर्थात विभिन्न धर्मों की अनेकता में एकता की संस्कृति, भारतीय संस्कृति अर्थात 'वसुधैव कुटुंबकम्' एवं 'अतिथि देवो भव:' की संस्कृति, भारतीय संस्कृति अर्थात विविधता में एकता की संस्कृति. भारतीय संस्कृति के संदर्भ में मदन मोहन मालवीय का वक्तव्य है- "भारतीय सभ्यता और संस्कृति की विशालता और उसकी महत्ता तो संपूर्ण मानव के साथ तादात्मय संबंध स्थापित करने अर्थात् वसुधैव कुटुंबकम् की पवित्र भावना में निहित है".

"कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौर-ए जहां हमारा"

विश्व की सबसे प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक हमारी संस्कृति की विविधता केवल धर्म भाषा उत्सव एवं अध्यात्म के स्तर पर ही नहीं बल्कि मौसम में भी प्रमुखता से दिखाई देती है हिमालय के अनश्वर बर्फ से लेकर दक्षिण के पठार तक. पश्चिम में रेगिस्तान से पूर्व के नम डेल्टा तक. सुखी गर्मी से लेकर पहाड़ियों की तराई के मध्य पठारों की ठंडक तक. भारतीय जीवन शैलियां इसके भूगोल की भव्यता स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं. भले ही हमारी भाषा अलग - अलग हो, हमारा धर्म अलग हो, वेश- भूषा अलग हो, खान-पान अलग हो, मगर हमारा दिल एक है. आज भी जब तिरंगे पर मर मिटने की बात आती है तो हम जाति-धर्म, संप्रदाय की बेड़ियों को तोड़कर खुशी-खुशी भारत मां के चरणों में अपना शीष चढ़ाने को तैयार रहते हैं. हमारे यहां गणपति महोत्सव भी धूम-धाम से मनाया जाता है और ईद भी, हम क्रिशमश भी मनाते हैं और गुरु नानक जयंती भी.

संस्कृति के शाब्दिक अर्थ पर विचार करें तो संस्कृति वह मौलिक आधार है जिस पर सभ्यता की इमारत खड़ी होती है. संस्कृति से ही किसी भी समुदाय के संस्कारों का बोध होता है जिसके आधार पर वह जीवन मूल्य आदर्श का निर्धारण करता है. उदाहरण के लिए अतिथि देवो भव: का मूल्य भारतीय संस्कृति का हिस्सा है, वहीं हाथ जोड़कर नमस्कार कर उसे अभिव्यक्ति देना हमारी सभ्यता को दर्शाता है.

विश्व के समस्त संस्कृतियों के इतिहास वाले अध्याय में भारतीय संस्कृति अपनी गतिशील प्रकृति के कारण मानव सभ्यता के शुरुआत तक जाती है. यह सुरक्षित सिंधु घाटी की रहस्यमयी संस्कृति से शुरू होती है एवं दक्षिण इलाकों में किसानों एवं आदिवासी समुदाय तक जाती है. इतिहास साक्षी है कि जब विश्व के विभिन्न सभ्यताओं के लोग पेड़ के पत्ते पहनकर जंगलों में जीवन यापन करते थे तब सिंधु सभ्यता के लोग पुर्णत: व्यवस्थित एवं सभ्य जीवन यापन करते थे. उस वक्त सिंधु सभ्यता अपने स्थापत्य कला के लिए विश्व प्रसिद्ध थी. उपलब्ध साक्ष्य द्वारा प्राप्त सूचनाओं के अनुसार लोहे तांबे और अन्य धातुओं के उपयोग काफी शुरुआती समय में भी भारतीय उपमहाद्वीप में प्रचलित थे. जो दुनिया के इस हिस्से द्वारा की गई प्रगति का संकेत हैं. उस समय तक भारत एक अत्यंत विकसित सभ्यता के क्षेत्र के रूप में उभर चुका था. इन्हीं ऐतिहासिक उपलब्धियों के कारण भारतीय संस्कृति गौरवपूर्ण रही है.

यदि हम भारत की संस्कृति के विविधता एवं समन्वयता दोनों बिंदुओं पर एक साथ विचार करें तो इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि एक ओर जहां महात्मा बुद्ध ने विश्व को अहिंसा एवं शांति का पाठ पढ़ाया वहीं दूसरी ओर सुभाष चंद्र बोस जैसे महानायक ने परतंत्रता के विरोध में विद्रोह का बिगुल बजाकर अपने युग का नेतृत्व किया. भारतीय संस्कृति की गौरवशीलता का प्रमाण देते हुए भारत की पूर्व विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने संयुक्त राष्ट्र संघ में कहा था-

"भारत ने विश्व युद्ध नहीं, बुद्ध दिया है"

भारत की संस्कृति सदैव ही सर्वग्राही रही है. यह विभिन्न सांस्कृतिक धाराओं का महासंगम है. जिसमें सनातन संस्कृति से लेकर आदिवासी तिब्बत मंगोल हड़प्पा और यूरोपीय धाराएं समाहित हैं. भारतीय संस्कृति का अनोखा रूप स्वरूप गंगा जमुनी तहजीब के रूप में प्रसिद्ध है. भारतीय संस्कृति में जहां के मूल निवासियों के समन्वयक की प्रक्रिया के साथ ही बाहर से आने वाले शक, हूण, यूनानी एवं कुषाण भी यहां की संस्कृति में घुल मिल गए. इसके अलावा अरबों, तुर्कों एवं मुगलों के माध्यम से यहां इस्लामी संस्कृति का आगमन हुआ. इसके बावजूद भारतीय संस्कृति ने अपना अस्तित्व बनाए रखा एवं नवागत संस्कृतियों की अच्छी बातों को उदारतापूर्वक अपनी संस्कृति में समन्वित करती रही. आज हम वेश भूषा, भाषा, कला, संगीत हर तरह से वैश्विक संस्कृति के नमूने हैं. कौन कहेगा कि सलवार सूट, हलवा, कबाब, पराठे शुद्ध भारतीय व्यंजन नहीं हैं.

भारतीय संस्कृति अध्यात्म एवं दर्शन जैसे शीर्ष ऊंचाइयों के क्षेत्र में भी अछूता नहीं है. वैदिक काल में शंकराचार्य से लेकर जिन्होंने अद्वैतवाद एवं परमार्थिक सत्य जैसे दर्शन दिए जिसे आधार बनाकर वर्तमान समय में विदेशों में मेटाफिजिक्स के क्षेत्रों में अनुसंधान चल रहे हैं, तो आधुनिक काल में विवेकानंद जैसे युग पुरुष ने शिकागो विश्व धर्म सम्मेलन 1830ई. में भारतीय संस्कृति के सद्भावना के मूल को गौरवान्वित किया. इसी संस्कृति में ही अध्यात्म एवं भौतिकता का समन्वय नजर आता है. भारतीय संस्कृति प्रकृति-मानव सहसंबंध पर बल देती है. हमारी संस्कृति मानव प्रकृति और पर्यावरण के अटूट एवं सहचार्य संबंधों को लेकर चलती है. भारतीय उपनिषदों में इशावस्यइंद सर्वम् अर्थात जगत के कण-कण में ईश्वर की व्यापकता को स्वीकार किया गया है.

इसी भारत भूमि के विभिन्न विचारकों एवं महापुरुषों ने भारत की वैविध्य पूर्ण संस्कृति को समन्वित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया. फिर चाहे बुद्ध, तुलसीदास या गांधी हो, इन सभी को भारतीय संस्कृति के नायक के रूप में प्रस्तुत किया जाता है. इसके अतिरिक्त भारत के अंदर विभिन्न धर्म हिंदू, जैन, बौद्ध, मुस्लिम, सिख, ईसाई आपस में शांतिपूर्ण सह अस्तित्व का पर्याय हैं. वहीं वर्तमान परिपेक्ष में देखें तो भारत के संविधान ने भारत राष्ट्र को धर्मनिरपेक्ष एवं पंथनिरपेक्ष के मूल्यों से में समेटकर हमारी सांस्कृतिक गरिमा को बनाए रखा है.

यह ध्यातव्य है कि विज्ञान एवं साहित्य के उल्लेख के बिना भारतीय संस्कृति अधूरी है. संस्कृति का स्वरूप साहित्य में सबसे अधिक समर्थ पूर्ण तरीके से अभिव्यक्त होता है. संस्कृति साहित्य का प्राण है. साहित्य के विभिन्न विधाओं में संस्कृति के प्रभाव को देखा जा सकता है. यहां की संस्कृति के आधारभूत मूल्य दया, करुणा, प्रेम, शांति, सहिष्णुता, लचीलापन इत्यादि को भारतीय साहित्य में समुचित तरीके से अभिव्यक्ति दी गई है. भारतीय संस्कृति का यह समन्वित रूप रामायण, महाभारत, गीता, कालिदास, भवभूति, भास के काव्य और नाटकों के माध्यम से बार- बार अभिव्यक्त हुआ है. भारतीय संस्कृति ने साहित्य के समन्वय के क्षेत्र में भी उदारशीलता का परिचय दिया है. चाहे वह तमिल का संगम साहित्य, हो तेलुगु का अवधान साहित्य, हिंदी का भक्ति साहित्य या मराठी का पोवाडा नीति, भारतीय उद्यान के अनमोल फूल हैं.

इसकी संयुक्त माला निश्चय ही भारत की विविधता में समानता वाली संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है. भक्तिकालीन कवि तुलसीदास के साहित्य में इस संबंध में भावना का सुंदर स्वरूप प्रस्तुत होता है-

करत दंडवत देखी तोहि भरत लीन्ह उर लाई
मनहुं लखन सब भेंट भई प्रेम न हृद्य समाई.

भारतीयों ने गणित व खगोल विज्ञान पर प्रमाणिक व आधारभूत खोज की. शून्य का आविष्कार, पाई का शुद्धतम मान, सौरमंडल का सटीक विवरण, अणु-परमाणुओं की अवधारणा का बीज भारत में ही तैयार हुआ. अत: इस बिंदु पर आधुनिक कवि दिनकर की पंक्तियां प्रासंगिक सिद्ध होती हैं-

संसार को पहले हम हीं ने ज्ञान शिक्षा दान की
आचरण की, व्यापार की, व्यवहार की, विज्ञान की.

निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि धार्मिक भौगोलिक ऐतिहासिक विविधता के बावजूद दया करुणा एवं वसुधैव कुटुंबकम् जैसे मूल्य सभी भारतीयों को एकता की डोर में बांधे हुए हैं. प्राचीन समय से ही भारत में अनेक प्रजातियों का आना-जाना बना हुआ है. उनमें से अनेकों लोग यहीं बस गए. धीरे-धीरे उनके रहन-सहन, रीति-रिवाज, खान-पान सब हमारी संस्कृति में रच-बस गए एवं एक मिली-जुली संस्कृति का रुप ले लिया. आज जो लोग यहां निवास कर रहें हैं, भले ही उनकी भाषाएं, बोलियां, धर्म, संस्कृति, नस्ल, प्रजातियां अलग-अलग है पर इन सब के बावजूद यह कहा जा सकता है कि यह सब एक भारत, अखंड भारत का प्रतिनिधित्व करते हैं. हमारी माला भले ही अलग-अलग फूलों से बनी हुई है मगर हम एक ही धागे में पिरोये हुए हैं. हां इतना अवश्य है कि कुछ तत्कालिक नकारात्मक घटनाओं व प्रभावों ने जो धुंध हमारी सांस्कृतिक जीवन शैली पर आरोपित की है, उसे सावधानीपूर्वक हटाना होगा. आज आवश्यकता है कि हम अपने अतीत की सांस्कृतिक धरोहर को सहेजे तथा सवारे और उसकी मजबूत आधारशिला पर खड़े होकर नए मूल्यों एवं नई संस्कृति को निर्मित एवं विकसित करें. अत: किसी ने क्या खूब कहा है-

छोड़ो कल की बातें, कल की बात पुरानी
नए दौर में लिखेंगे हम मिलकर नई कहानी
हम हिंदुस्तानी, हम हिंदुस्तानी

भारतीय संस्कृति के उपादान

"डॉ. हरदेव बाहरी द्वारा रचित "प्राचीन भारतीय संस्कृति कोश" से उद्धृत

- शुभ लक्ष्मी शर्मा
राजभाषा अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, गोरखपुर

संस्कारों की भिन्नता के कारण ही प्रत्येक देश की संस्कृति राष्ट्रीय हो जाती है। संस्कृति का प्रकाश विविध जातियों के अपने-अपने सौन्दर्य बोध, उनके धर्म, दर्शन, साहित्य और कला में होता है। भारत ने अनेक सांस्कृतिक तत्वों को अपने ढंग से सोचा और कहा है। संस्कृति के प्रसंग में भारत की जो उपलब्धि है, वही भारतीय संस्कृति है। संक्षेप में इसकी विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

भारतीय संस्कृति मूलत: धार्मिक है। मनुष्य के सबसे महत्वपूर्ण व्यापार और पवित्र विश्वासों का नाम धर्म है। धर्म की धुरी मानव आत्मा की वह धारणा है जिसे आध्यात्मिक कहा गया है। जो कुछ धारणीय है, उसे धर्म कहते हैं। जिससे इहलोक और परलोक में कल्याण की सिद्धि हो, वही धर्म है। संक्षेप में धर्म वह मंदिर है जिसमें हमारे आदर्शों के दीप जलते हैं। जिनके प्रकाश में हम मन का संतोष, आत्मा का साक्षात्कार और जीवन के सुंदर लक्ष्य का स्वरूप देखते हैं। मनु ने धर्म के दस लक्षण बताए हैं: धैर्य, क्षमा, संयम अस्तेय (किसी की वस्तु न चुराना), शौच, इंद्रिय निग्रह, तर्क, बुद्धि, विद्या, सत्य और अक्रोध। विश्व की किसी अन्य संस्कृति के अंतर्गत धर्म की ऐसी पूजा- निरपेक्ष, चरित्रपरक, उदात्त और मानवीय व्याख्या नहीं की गयी। परंतु भारत ने ईश्वरीय सत्ता को कभी नकारा नहीं है। यहाँ कई नास्तिक, चार्वाक और अनीश्वरवादी संप्रदाय उठे, पनपे नहीं। हमने माना है कि मनुष्य उसी सत्ता या ब्रह्मा का अंश है।

मनुष्य में दैवीय गुण हैं जिन्हें जागृत किया जा सकता है। वेद ने ऊंचे स्वर से कहा कि "इशावास्य मिदं सर्वं।" हम ईश्वर में है और ईश्वर हम में है। नर से नारायण होना हमारा लक्ष्य है। इसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मनु ने आत्मिक और चारित्रिक उदात्तता जैसे गुण साधन के रूप में गिनाये हैं। हमारे मनीषी वेदांत के उस सिद्धांत तक पहुँचे हैं जो प्रत्येक प्राणी को ईश्वरमय मानता है। तत्वमसि। सर्व खलु इदं ब्रह्म।

जगत की ब्रह्ममयता के कारण भारतीय संस्कृति की विशेषताओं में सहिष्णुता और उदारता उल्लेखनीय है। हमारा इतिहास साक्षी है कि हमने विरोधी विचारों का दमन कभी नहीं किया। हम मतभेदों में अभेद की खोज करते आ रहे हैं। समन्वय की भावना हमारी संस्कृति का मुख्य आधार है। हमने नाना जातियों की संस्कृतियों को ऐसा अपनाया कि अलगपन का नाम-निशान ही नहीं रह गया। हमने नाना मतांतरों, प्रणालियों, सिद्धांतों और परम्पराओं को उदार मन से ग्रहण किया और उन्हें भारतीय बना दिया। जिस प्रकार समुद्र में अनेक नदियां आकर गिरती हैं और एक हो जाती हैं, उसी प्रकार भारतीय संस्कृति अनेक विचारधाराओं को अपने में समाहित करती हुई विकास के मार्ग पर निरंतर गतिशील है। अनेकता में एकता स्थापित करना ही भारतीय संस्कृति का ध्येय रहा है।

हमारी संस्कृति का यह उद्घोष रहा है कि कर्म करते हुए सौ वर्ष जीवित रहो। निष्काम कर्म योग भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र है। व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठ कर जनहित के लिए कार्य करने का उपदेश हमारे ऋषियों ने दिया है। गीता में कर्म की कुशलता को योग का नाम दिया गया है- योग: कर्मसु कौशलम। हमारी संस्कृति नि:स्वार्थ कर्म करने पर बल देती है। "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेष कदाचन" की उदात्त भावना भारतीय संस्कृति की देन है।

निष्काम कर्म और चरित्र प्रधान धर्म ने वैराग्य की भावना को जन्म दिया जो लोक कल्याण के लिए परम आवश्यक है। वैराग्य की भावना आ जाने पर मनुष्य सांसरिक सुखों को तुच्छ समझने लगता है। हमारे देश में अनेक महापुरुष हुए हैं जिन्होंने राज, वैभव, और सुख ऐश्वर्य को छोड़ कर लोक कल्याण के पथ पर चलना श्रेयस्कर समझा। वैराग्य से त्याग उत्पन्न होता है और त्याग से नि:स्वार्थ और विश्व बंधुत्व की भावना उत्पन्न होती है। प्राणि - मात्र के प्रति दया और प्रेम का संचार करने में भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस संस्कृति ने हमें "वसुधैवकुटुंबकम" का पाठ पढ़ाया है। जिस संस्कृति में पेड़, पौधे, लता, चूहे, उल्लू जैसे तुच्छ वनस्पतियों और प्राणियों को महत्व मिला है वह संस्कृति मानव जाति के महत्व को कैसे नकार सकती थी।

पाश्चात्य संस्कृति बुद्धिवादी और भौतिकवादी है। वह खाओ पीओ मौज उड़ाओ में विश्वास रखती है किन्तु भारतीय संस्कृति का संदेश भिन्न है- तेन त्यक्तेन भुजीथा अर्थात, जो कुछ है उसे बाँटकर खाओ। अपनी भौतिक विलासिता के लिए संघर्ष मत करो। पश्चिमी संस्कृति शारीरिक विलासिता की ओर अग्रसर रही है जबकि भारतीय संस्कृति तप, संयम और साधना पर बल देती रही है। तप से बल मिलता है।

राजा हो चाहे ब्राह्मण, राक्षस हो या शूद्र, तप से लोगों ने बड़ी-बड़ी अलौकिक शक्तियाँ प्राप्त की हैं। इस ग्रंथ में वर्णित कई पुरुषों की जीवनी से यह उपदेश मिलता है।

"जिस प्रकार समुद्र में अनेक नदियां आकर गिरती हैं और एक हो जाती हैं, उसी प्रकार भारतीय संस्कृति अनेक विचारधाराओं को अपने में समाहित करती हुई विकास के मार्ग पर निरंतर गतिशील है"

-डॉ हरदेव बाहरी

भारतीय संस्कृति की एक अन्य विशेषता यह है कि यह अटूट और अविच्छिन्न रही है। श्री अरविंद ने लिखा है- तीन सहस्र वर्ष से भी पहले प्रारम्भ होने वाली और अभी तक नि:शेष रहने वाली ऐसी महान और सुंदर मानसिक क्रियाशीलता अद्वितीय है और इस बात का सर्वोत्तम और अकाट्य प्रमाण है कि हमारी संस्कृति में कुछ असाधारण, स्वस्थ और जीवंत तत्व हैं। मिस्र, यूनान, रोम और भारत इन चारों देशों की संस्कृति प्राचीनतम बताई जाती है, परंतु मिस्र, यूनान और रोम की प्राचीन संस्कृति समूल नष्ट हो चुकी है। भारतीय संस्कृति का इतिहास संभवत: उन सबसे पुराना तो है ही, लगातार धाराप्रवाह रूप से भी चलता रहा है। डॉ इकबाल ने ठीक कहा है-

"यूनान, मिस्र और रोमा सब मिट गए जहां से,
बाकी मगर है अब तक नाम-ओ-निशां हमारा,
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौर-ए-जमां हमारा"

भारतीयों को प्राचीनता से सदा प्रेम रहा है। हमारी संस्कृति हमें अपने पूर्वजों, अवतारों, आचार्यों, गुरुओं, माता-पिता और बड़े-बूढ़ों का सम्मान करना सिखाती है। क्यों न हो? भारत ने योग्य पुरुषों, योग्य कलाकारों, वीर राजाओं, महान दार्शनिकों, बड़े-बड़े तपस्वी, योगी, ऋषि-मुनियों और समाज निर्माताओं, योद्धाओं और सेनानायकों को जन्म दिया है, जो हमारे समाज को स्फूर्ति देते रहे हैं। भला अपने अतीत को कैसे भुला सकते हैं! आज भी अतीत के सप्राण आदर्श हमारे जीवन को आलोकित कर रहे हैं।

भारत भूमि को प्रकृति ने अनेक रंगों से सजाया है। उच्चता का प्रतीक हिमालय, धरती का स्वर्ग कश्मीर, ऋषियों के यज्ञों से पवित्र बनी हुई नदियाँ, तपस्वियों के पावन अणुओं और परमाणुओं से भरपूर वनस्थलियाँ, मेखला की तरह भारत के मध्य में स्थित पर्वत मालाएँ, समन्वय और संपन्नता के निकेतन दक्षिण के पूर्वी और पश्चिमी घाट एवं विलासिता तथा वैभव की याद दिलाने वाली रावण की लंका, इन सबने भारतीय संस्कृति को प्रभावित किया है। भारत का कण-कण हमारे ऋषियों के तप से पवित्र हो गया है। भारत में सैकड़ों तीर्थ हैं जिन्हें हमारे पूर्वजों ने प्रकृति के सौन्दर्य में ढला देखा और उन्हें अपनी तपोभूमि बनाया। उन्होंने प्रकृति का मानवीकरण किया और उसे देवी का रूप दिया। भारतीय संस्कृति में सूर्य, चंद्रमा, वरुण, अग्नि, मरुत, सोम, उषा, रात्रि, बृहस्पति, पृथ्वी, समुद्र सब देवता बन गए। भारतीय साहित्य और कला में इनका जैसा चित्रण हुआ है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। निश्चय ही भारतीय संस्कृति के विकास में यहाँ की प्रकृति का महत्वपूर्ण योगदान है। भारतवासियों ने पशु-पक्षी तथा अन्य जीवों को भी कभी तुच्छ नहीं माना है। वैदिक काल से ही अनेक पशु-पक्षियों में मानवीय गुणों की कल्पना की जाती रही है। पौराणिक मान्यता है कि विष्णु ने वराह, मत्स्य, कच्छप और नरसिंह रूप में अवतार लिया। सिंह, बैल, कुत्ता, गदहा गरुड़ और हंस यहाँ तक कि उल्लू और चूहा भी देवताओं के वाहन हैं। हिन्दू मानते हैं कि गिध्द, बंदरों और भालुओं ने राम की सहायता की थी।

भारत प्राचीन युग में अत्यंत समृद्ध और सम्पन्न देश था। कृषि से भांति-भांति के अन्न, खानों से बहुमूल्य खनिज पदार्थ और रत्न तथा समुद्र से मोती प्राप्त होते थे। उत्पादन की प्रचुरता के कारण हमारे व्यापारिक संबंध दूर-दूर के देशों के साथ रहे हैं। सोने की चिड़िया कहा जाने वाला भारत सदैव सुख और समृद्धि से परिपूर्ण रहा है। भारत की विशाल धरती पर दूध की नदियाँ बहती थीं। अल्प श्रम से पर्याप्त मात्रा में भोजन-वस्त्रादि की प्राप्ति हो जाती थी। ऐसे में हमारे पूर्वज निश्चिंत होकर साधना-रत रहते थे। एक-एक ऋषि के आश्रम में सैकड़ों-हजारों ब्रह्मचारी शिक्षा-दीक्षा ग्रहण करते थे। इस समृद्धि और शांति की गोद में भारतीय संस्कृति प्रस्फुटित हुई, पली और विकसित हुई।

भारतीय संस्कृति के विकास का एक प्रमुख कारण हमारी वर्णाश्रम व्यवस्था रही है। हमारे ऋषियों ने सौ वर्ष के औसत जीवन को चार आश्रमों में सुव्यवस्थित किया है- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास। प्रथम तीन आश्रमियों का निर्वाह गृहस्थों के जिम्मे था और अंतिम आश्रमी प्रकृति की गोद में बैठकर शांतिपूर्ण अध्यात्मक चिंतन में अपना समय बिताते थे। इसी से भारतवासियों में दानशीलता, आतिथ्य-सत्कार, उदारता, उत्सर्ग-भाव और आध्यात्मिकता जैसे सर्वोच्च गुण विकसित हुए।

भारतीय संस्कृति के निरंतर विकास का एक कारण यह भी था कि जनता पर राज्य का कम से कम भार था। जीवन सरल था, अपराध कम थे, इसलिए शासन की ओर से बंधन नहीं के बराबर थे। कानून की जटिलताएँ नहीं थीं।

भारतीय संस्कृति की वाहक संस्कृत भाषा का महत्व बहुत अधिक है। संस्कृत और संस्कृति अविच्छिन्न। यदि संस्कृत भाषा न होती अर्थात संस्कृत भाषा का साहित्य उपलब्ध न होता तो भारतीय संस्कृति का नाम लेना भी विरला ही होता। संस्कृति बहुमूल्य संपत्ति है।

"खुद कमाओ खुद खाओ, यह प्रकृति है, दूसरा कमाये तुम छीन कर खाओ यह विकृति है, खुद कमाओ दूसरों को खिलाओ, यह भारतीय संस्कृति है"

आज़ादी का अमृत महोत्सव

फिरोजपुर बॉर्डर की यात्रा

- कार्त्तिक मित्तल
सहायक प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय-लुधियाना

यात्रा एक ऐसा अनुभव है जिसे शब्दों में बयान करना अक्सर चुनौती से भरपूर होता है. मैं कोशिश करूंगा कि मैं अपने अनुभव का सीधा प्रसारण अपने शब्दों द्वारा कर पाऊं.

देशभक्ति एक ऐसा शब्द जिसे हर इंसान एक दिन महसूस कर सकता है. परंतु इसका असली अहसास मुझे तब होता है जब मैं फिरोजपुर बॉर्डर पर अपने भारतीय सैनिकों का मनोबल बढ़ाने के लिए वहां पहुंचता हूं.

तो इसकी शुरुआत कुछ इस प्रकार होती है कि मेरी मां और मेरी बहन मेरे पास लुधियाना आए हुए थे. अब जैसे की हर छोटी बहन की इच्छा होती है कि अपने बड़े भाई के पास आकर उन्हें घूमना होता है तो मेरे यहां भी माहोल कुछ ऐसा ही बना.

चूकि पंजाब अपने खाद्य पदार्थो के लिए जाना जाता है, तो हमने भी सोचा कि क्यों न अमृतसर जाकर अमृतसरी कुलचे का स्वाद चखा जाएं. यह तो सिर्फ मजाक की बात थी परंतु असली कारण तो यह था कि हमें श्री हरमिंदर साहिब जी के दर्शन करने थे. आप मानोगे नहीं हम यहां 20 साल बाद आए थे, लेकिन अमृतसर का वही प्यार देखकर लगा ही नहीं कि इतने सालों बाद यहां लौटा हूं. दर्शन हमारे बहुत अच्छे से हुए. फिर हमने जालियांवाला बाग देखा जहां उस समय की सारी तस्वीर मेरी आंखों के सामने छा गई कि किस प्रकार उस समय उन सभी ने दर्द सहा होगा और वह कैसा समय और दृश्य रहा होगा. यह सारी ऐतिहासिक जगह हमें तत्पर याद दिलाती हैं कि हमारे स्वतंत्रता सैनानियों का सच में हम पर कितना उपकार है.

अब पंजाब में हैं, तो यहां की वर्ल्ड फेमस लस्सी तो चखनी बनती है. पेट पूजा करने के बाद हम दुर्गेना मंदिर के लिए रवाना हुए. वहां भी हमारे दर्शन बहुत अच्छे से हुए. मैं पंजाब के अपनेपन को देखकर बहुत खुश हुआ.

अपने सभी साथियों से पूछने के बाद मुझे फिरोजपुर बॉर्डर के बारे में पता चला. इस बॉर्डर की सबसे अच्छी बात यह है कि आप देशभक्ति को बहुत ही करीब से महसूस कर पाते हो.

हम वहां सबसे पहले पहुंच गए और उसके बाद धीरे-धीरे सभी लोगों का आना शुरू हुआ. फिर सामने पाकिस्तान के नागरिक भी आने शुरू हुए.

वह समय ही कुछ अलग सा था. सबसे सुंदर रूपांतरण इस यात्रा का यही है कि कैसे दोनों देश के देशवासी अपने मुल्क के लिए बढ़-चढ़कर अपने सैनिकों का मनोबल बढ़ा रहे थे.

यह देखकर बहुत अच्छा लगा कि कैसे दोनों देशों ने अपने देशभक्ति के गीत चलाएं और उसी के लय में सभी देशवासी भी अपनी देशभक्ति का परचम लहरा रहे थे.

इस बात को भी अंकित करना आवश्यक है कि दोनों देशों के देशवासियों ने एक दूसरे की गरीमा का भरपूर ध्यान रखा.

फिर समय आया जिसका हम सभी को इंतजार था. सेरेमनी की शुरुआत हुई. पाकिस्तान और भारत के सैनिकों ने अपनी-अपनी ताकत का प्रदर्शन किया. और यह दृश्य इतनी नजदीक से देखकर बहुत ही गौरवांवित महसूस हुआ.

मेरा मानना है कि इन जगह पर जाकर आपको अहसास होता है कि कैसे सप्रेम, शांति और सद्भावना से शक्ति प्रदर्शन किया जा सकता है. और शायद यही इसका अंतिम मकसद भी है !

अंत में यही कहूंगा :

अनगिनत हैं नक्षत्र गगन में, पर दूजा राकेश नही ।

देश सैंकड़ों हैं धरती पर, परंतु भारत जैसा देश नही ।।

हास्य कविता : मार्डन पत्नी की व्यथा

- आस्था मलेवार
सहायक प्रबन्धक
क्षेत्रीय कार्यालय चण्डीगढ़

रात के करीव 11 बज रहे थे और रोज की तरह मोहल्ले की नुक्कड़ पर कुत्ते भौंक रहे थे...

दूर से गाड़ियों के हार्न का शोर था और यहीं घर के बेडरूम में माडर्न पत्नी के पतिदेव के खर्राटों का शोर था...

झुंझुलाते हुए पत्नी ने अपने पति को देखा और हाथ जोड़ भगवान से बोली प्रभु जो मेरे पति के खर्राटे हो बन्द, तो चढ़ाऊ तुझे मेवा....

सुबह आँख खुली तो पत्नी ने पाया खुद को एक आलीशान बंगले में,

खुशी से फूली न समाई वो, लगा जैसे पतिदेव को मिल गई बोनस साल के पहले ही महीने में,

खींचा तभी किसी ने और बिठाया भैंस पर, उड़ चला वो भैंस जैसे इतराती वो अपने पति के कैश पर,

समझ पाती वो कुछ उससे पहले भैंस ने उसे जमीन पर पटका, आसपास देख पत्नी का माथा ठनका ...

सामने यमराज को देख उसे लगा 440 वोल्ट का जोरदार झटका, यमराज ने पूछा स्वर्ग जाना है या नर्क ...

नाक, भौंह सिकोड़ती मुँह बिचकाती पत्नी ने बोला, कहीं भी रह लूंगी बस कुछ शर्ते सुन लो मेरी भी बेशक...

शर्ते सुन यमराज कुछ सकपकाया, पर इसके पहले ही माडर्न पत्नी ने फरमाया, रहूंगी बड़े से कमरे में जहाँ हो दो-चार नौकर चाकर, खाट हो सागोन लकड़ी का, हो जिसपर मलमल की चादर,

रूम फ्रेशनर मुझे लैवेन्डर ही सुहाता है, नाश्ते में मुझे कीवी शेक और फ्रेंच टोस्ट ही भाता है, सप्ताह में मुझे जाना होता है एक दिन पार्लर, करती हूँ सहेलियों संग पार्टी रेगुलर ...

साल में मुझे दो बार विदेशी यात्रा का दे देना टिकट और अभी निकालो कैश ताकि मैं कर लूं स्वर्ग के लिए शापिंग झटपट ...

शर्ते सुन यमराज का सिर चकराया, बोला मैं तेरे खर्चे नहीं उठा पाऊंगा, तुझे तो तेरे पति के पास वापस छोड़ आऊँगा ...

ये सुन पत्नी जोर-जोर चिल्लाई प्रभु पत्नी के खर्राटे और न सह पाऊँगी, यहीं मेनका, उर्वशी संग रह जाऊँगी ...

जाने-पहचाने कुछ आवाज गुजरी पत्नी के कान से, आँखे खोली तो देखा पति अभी भी ले रहे हैं खर्राटे शान से ...

भारतीय संस्कृति का विहंगावलोकन - पुरी का जगन्नाथ मंदिर

कैलाश सोनी
महा प्रबंधक - उत्तर बंगा क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक
(सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया द्वारा प्रायोजित)
कूचबिहार, प. बंगाल

भारतीय संस्कृति के बारे में पंडित मदन मोहन मालवीय जी का कहना है कि भारतीय संस्कृति की विशालता तो हमारे साहित्य में समाहित है जिसमें "वसुधैव कुटुंबकम " जहां पर सारा विश्व हमारा परिवार है, "अतिथि देवो भव" यहां तो मेहमानों को भी भगवान माना जाता है, "स्थान देवताभ्यो नम:" स्थान देवता को भी पूजा जाता है और इतना ही नहीं बल्कि "ईशावास्य सर्वम" अर्थात जगत के कण-कण में ईश्वर की व्यापकता को स्वीकार किया गया है.

4 वेद, 6 शास्त्र, 18 पुराण और 108 उपनिषदों ने भारतीय संस्कृति को अमूल्य, गौरवमयी एवं कालजयी बनाया है. मध्य- काल के कालखंड में भारत की भिन्न - भिन्न भाषाओँ के साहित्य जैसे - तमिल के संगम साहित्य, तेलुगु के अवधान साहित्य और हिंदी के भक्ति साहित्य ने हमारी संस्कृति को दिव्यता प्रदान करते हुए और भी अधिक अनमोल कर दिया है.

विश्व की संस्कृतियों में भारतीय संस्कृति प्राचीनतम (5000 वर्ष) है. इसकी आधारभूत संरचना में दया, करुणा, प्रेम, शांति, सहिष्णुता और क्षमा शीलता को सर्वाधिक एवं सर्वोच्च भागीदारी दी गयी है और अगर हम इस पर समन्वित रूप से विचार करें तो मनुष्य के चारों पुरुषार्थ - धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को इस संस्कृति में समाहित किया गया है.

भारतीय संस्कृति के कालजयी आभा-मंडल के संरक्षण में आदि गुरु शंकराचार्य जी का अभूतपूर्व योगदान रहा है. सनातन संस्कृति के लिए एक दिव्य अवतार के रूप में प्रकृति ने आदि शंकराचार्य को अवतरित किया था इसलिए उन्हें भारतीय गुरु परम्परा में सर्वोच्च धर्मगुरु की उपाधि मिली है. आदिगुरु शंकराचार्य जी ने 6 वर्ष की आयु में ही 4 वेद, 6 शास्त्र, 18 पुराणों सहित 108 उपनिषदों का अध्ययन कर लिया था. इसी संदर्भ में कहना चाहूंगा कि तुलसीदास जी ने भी अपने महाकाव्य श्रीरामचरितमानस में ऐसी ही भावना और दृष्टिकोण से उल्लेख किया है...

"गुरु गृह गए पढ़न रघुराई, अल्पकाल विद्या सब पाईं" (बालकाण्ड)

अर्थात भगवान राम ने भी अल्प काल में ही अपनी शिक्षा पूरी कर ली थी. आदिगुरु शंकराचार्य जी ने सनातन धर्म की प्रतिष्ठा हेतु पूरे

भारत में भ्रमण किया और पूरे भारत को भारतीय संस्कृति के एक सूत्र से बांधने हेतु चारों दिशाओं में 4 मठ स्थापित करने का निश्चय किया. उत्तर में बद्रीनाथ - ज्योर्तिमठ, पूर्व में पुरी - गोवर्धन मठ, दक्षिण में रामेश्वरम - श्रृंगेरी पीठ और पश्चिम में द्वारका - शारदा पीठ को स्थापित किया. उन्होंने अद्वैत वेदांत के सिद्धांतों को ठोस आधार प्रदान किया. मैंने अपनी पुरी यात्रा के दौरान 'गोवर्धन मठ' में जाकर वर्तमान धर्मगुरु शंकराचार्य स्वामी श्री निश्चलानंद जी के आध्यात्मिक प्रवचन सुनें और उनके आशिर्वाद के उपरांत भोजन प्रसादी से आत्मा को तृप्त किया.

जगन्नाथपुरी के धाम तक पहुंचने के लिए हवाई यात्रा से भुवनेश्वर तक और फिर 60 किलोमीटर टैक्सी की यात्रा करके गंतव्य स्थान तक पहुंचा जा सकता है. ट्रेन से भी पुरी तक की यात्रा की जा सकती है.

पुरी धाम में, एक तरफ अगाध और अविरल जलराशि जलधि (समुद्र) है जो अमूल्य रत्नों को अपने आंचल में समाहित किए है. तभी तो तुलसीदास जी ने अपने महाकाव्य "श्रीरामचरितमानस" में लिखा है...

"कनक थार भरि मनि गन नाना" (सुंदरकाण्ड)

अर्थात समुद्र देवता ने सोने की थाली में, विभिन्न प्रकार के अमूल्य रत्न कों लेकर प्रभु श्री राम के पास आए.

पुरी धाम में, दूसरी तरफ भारतीय संस्कृति से ओतप्रोत और आध्यात्मिकता के ओज से परिपूर्ण जगत के नाथ प्रभु श्री जगन्नाथ जी का भव्य मंदिर है.

यह मंदिर सभी हिंदुओं के लिए विशेष है. कई वैष्णव संत जैसे रामानुजाचार्य, माधवाचार्य, निंबार्काचार्य, वल्लभाचार्य, रामानंद जी इस मंदिर के निकटता से जुड़े थे. इस्कॉन के संस्थापक प्रभुपाद जी और गौड़ीय संप्रदाय के संस्थापक चैतन्य महाप्रभु जी भी इस मंदिर के सानिध्य में रहकर खूब प्रभु के नाम का जाप और प्रचार प्रसार किया.

इतिहासकारों के अनुसार, जगन्नाथ मंदिर का निर्माण कलिंग के राजा अनंतवर्मन चोडगंगदेव ने अपने शासनकाल के 10 वीं शताब्दी में करवाया था इसके बाद उड़ीसा के शासक अनंग देव ने भी इस मंदिर को वर्तमान रूप दिया. मंदिर का मुख्य ढांचा 214 फीट ऊंचा है जो कलिंग की वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना है! इस मंदिर की वास्तुकला में ऐसा अद्भत और आश्चर्यजनक ज्यामितीय प्रयोग किया गया है कि मंदिर की परछाई भी प्रतीत नहीं होती है और मंदिर के शिखर पर स्थित ध्वजा हवा के विपरीत दिशा में लहराता है तथा ध्वजा के साथ सुदर्शन चक्र को जिस तरफ से देखें उसका अग्र भाग आपके सामने ही दिखता है. मंदिर के शिखर के ऊपर से कोई पक्षी या विमान नहीं जाता. ऐसा अकल्पनीय विज्ञान सिर्फ़ और सिर्फ़ भारत के वास्तुविदों के पास ही था.

जगन्नाथ मंदिर के चार द्वार हैं मुख्य द्वार पूर्व दिशा की ओर जिसे सिंहद्वार भी कहते हैं. इस द्वार से 22 सीढ़ियों को चढ़ कर मंदिर प्रांगण में आ जाते हैं लेकिन ध्यान दें...!

मंदिर की पहली सीढ़ी के मध्य में काले रंग का एक पत्थर लगा हुआ है जिसे यमशिला कहते हैं. मंदिर में प्रवेश करते समय यमशिला अर्थात यमराज के सर पर पांव रखकर दयालु प्रभु श्री जगन्नाथ जी की शरण में जा सकते हैं लेकिन मंदिर से वापस आते समय यमशिला में आपका पांव नहीं लगना चाहिए. मंदिर प्रांगण के बाएं तरफ विश्व की सबसे बड़ी रसोई है जहां महारानी लक्ष्मी देवी की देखरेख में महाप्रसाद बनता है. महाप्रसाद बनने में केवल मिट्टी के बर्तनो का उपयोग किया जाता है. रसोई के एक तरफ गंगा कूप और दूसरी तरफ यमुना कूप है इसी जल से भोजन प्रसादी को पकाया जाता है. महाप्रसाद को चूल्हे पर मिट्टी की सात हांडीयो को एक के ऊपर एक रखकर एक साथ पकाया जाता है और आश्चर्य की बात यह है कि सबसे पहले सबसे ऊपर वाली हांडी का महाप्रसाद पकता है. भगवान जगन्नाथ और अन्य सभी देवताओं को भोग अर्पित करने के बाद मंदिर परिसर के आनंद बाजार में भक्तों के लिए रखा जाता है. आश्चर्य की बात यह है कि जगन्नाथ जी का यह सारा महाप्रसाद प्रभु के रात्रि विश्राम तक खत्म भी हो जाता है.

"जगन्नाथ का भात, जग पसारे हाथ"

मंदिर प्रांगण में विशाल अक्षय वट का वृक्ष है जो सभी की मनोकामनाओ को पूर्ण करता है. भारतीय संस्कृति की यह भी एक खूबसूरती है कि हमारे सनातन धर्म में पेड़ -पौधों को भी ईश्वर का निवास -स्थान माना गया है. गीता में भगवान कृष्ण कहते हैं...

"मूलत: ब्रह्म रूपाय मध्यतो विष्णु रुपिण:,
अग्रत: शिव रुपाय अश्वत्थाय नमो नम:"

अर्थात वृक्ष के मूल में ब्रह्मदेव मध्य में विष्णु भगवान और अग्रभाग में शिव शम्भू का वास होता है. भारतीय संस्कृति में सुहागिन स्त्रियां वट सावित्री का व्रत रख कर पूजा करती है. मंदिर प्रांगण में देवी विमला का मंदिर है जो 51 शक्तिपीठ में से एक महत्वपूर्ण शक्तिपीठ है. इस स्थान पर देवी सती की नाभि गिरी थी. जब तक भगवान जगन्नाथ जी को चढ़ाया गया भोजन प्रसादी देवी विमला को नहीं चढाया जाता है तब तक उसे महाप्रसाद नहीं माना जाता है. इसके बाद मंदिर प्रांगण में साक्षी गोपाल मंदिर जहां पर आपके जगन्नाथ मंदिर में आने की उपस्थिति दर्ज होती है. मंदिर प्रांगण में एक रोहिणी कुंड भी है.

पुराणों के अनुसार, जरा सावर नामक एक शिकारी ने अनजाने में भगवान श्री कृष्ण का वध कर दिया था उसके पश्चात उसने श्री कृष्ण का दाह संस्कार भी किया तब श्री कृष्ण ने उसे स्वप्न में दर्शन देकर बताया कि उनके अवशेष (अस्थियां) एक लकड़ी के लट्ठे के रूप में समुद्र से बहते हुए रोहिणी कुंड में जा पहुंचेगा.

फिर जरा शिकारी ने पुरी के राजा इंद्रद्युम्न की सहायता से उस पवित्र लकड़ी से भगवान जगन्नाथ, सुभद्रा और बलभद्र की प्रतिमाएं बनवाई. कहते हैं राजा इंद्रद्युम्न ने जगन्नाथ मंदिर का जीर्णोद्धार करवा कर प्रथम अभिषेक के लिए ब्रह्मा जी को आमंत्रित किया. ब्रह्मा जी इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए स्वर्ग से आए और अभिषेक करने के पश्चात जगन्नाथ, सुभद्रा और बलभद्र की प्राण प्रतिष्ठा का भी कार्य पूरा किया जिससे ब्रह्मदेव अत्यंत प्रसन्न हुए. इसके बाद ब्रह्मा जी ने पुरी के समीप 'अलार' पर्वत पर जाकर स्वयंभू विष्णु विग्रह को स्थापित किया और वहां पर नाम जाप किया. ब्रह्मा जी के ब्रह्म लोक में जाने के उपरांत पुरी के राजा ने इस मंदिर को अलवर संप्रदाय के वैष्णव को सेवा पूजा के लिए सौंप दिया. एक बार पुजारी को भिक्षा हेतु बाहर जाना था तब उन्होंने अपने अबोध बालक को भगवान की सेवा - पूजा और भोग के लिए कह कर गए दूसरे दिन बालक ने भगवान की सेवा - पूजा करके भोग लगाया यह क्या...! भगवान का भोग जस का तस रखा मिला. अपराध बोध का ज्ञान होते ही बालक रोने लगा तब विष्णु जी प्रकट हुए और भोजन प्रसादी को ग्रहण किया. हमारी भारतीय संस्कृति में अबोध बच्चे को भी भगवान के स्वरूप की संज्ञा दी गई है. अलारदेव मंदिर में, मेरी यात्रा के दौरान मैंने देखा कि एक बड़ी शिला में साष्टांग प्रणाम की छाप पड़ी हुई है वहां के पुरोहितों ने बताया कि यह छाप चैतन्य महाप्रभु जी के साष्टांग प्रणाम की है. पूर्ण समर्पण की भावना से किया गया साष्टांग प्रणाम से पत्थर भी मोम की भांति पिघल गए. ऐसी हमारी भारतीय संस्कृति है, जिस पर हमें गर्व है.

जगन्नाथ मंदिर में भगवान जगन्नाथ, सुभद्रा और बलभद्र जी सजीव विग्रह के रूप में है तभी तो प्रभु जगन्नाथ अक्षय तृतीया से 21 दिनों तक के लिए प्रतिदिन नरेंद्र सरोवर में जाकर चंदन पानी से स्नान करते हैं क्योंकि उन्हें गर्मी लगती है. 21 दिनों तक चंदन स्नान के बाद प्रभु को ठंड लगने के कारण ज्वर से पीड़ित हो जाते हैं. तब गुड़िचा मंदिर में 1 सप्ताह तक काढा का सेवन करते हुए विश्राम करते हैं. प्रभु श्री जगन्नाथ, सुभद्रा और बलभद्र जी अपनी रथ यात्रा के दौरान मौसी मां के घर भी जाते हैं वहां पर पोडा पीठा (मिठाई) खाते हैं. इस जगत के ठाठ बाट और ऐशो आराम की जगह से चिरनिद्रा को धारण करके खाट से घाट की ओर सबको जाना अनिवार्य है. इसी तारतम्य में, प्रभु श्री जगन्नाथ, सुभद्रा और बलभद्र जी के विग्रह को भी 12 वर्षों में एक बार नए विग्रह के रूप में परिवर्तित करके पुन:अभिषेक और प्राण प्रतिष्ठा की जाती है. तथा निर्जीव विग्रह को मंदिर परिसर के कालिंदी घाट के तट में विश्राम दिया जाता है.

भारतीय संस्कृति के चरमोत्कर्ष उपलब्धि का आनंद लें...!

एक मनुष्य जो मुस्लिम कुल में जन्म लेने के बावजूद भी प्रभु जगन्नाथ जी का अनन्य भक्त के रूप में अवतरित हुए जिन्हें बाद में नामावली स्वामी श्री हरिदास जी ठाकुर के नाम से जाना गया स्वामी श्री हरिदास जी ठाकुरने मुस्लिम कुल में जन्म लिया था अत: उनका जगन्नाथ मंदिर में प्रवेश वर्जित था क्योंकि यह मंदिर सिर्फ सनातनो के लिए है तो उन्होंने इसी विरान जगह (सिद्ध बकुल) में प्रतिदिन भगवान जगन्नाथ का सवा लाख नाम जप करने लगे. स्वामी जी, नाम जप के उपरांत ही भोजन ग्रहण करते थे. एक बार चैतन्य महाप्रभु जी, स्वामी श्री हरिदास ठाकुर के भजन स्थल में आए और वहां पर महाप्रभु जी ने जगन्नाथ जी की दातुन प्रसादी को मिट्टी में गाड दिया. कुछ समय बाद यह विशालकाय वृक्ष, खूब मोटी टहनी वाला और हरा भरा हो गया. स्वामी जी इसी वृक्ष के नीचे भजन में लीन रहते थे. एक बार तत्कालीन राजा को जगन्नाथ के रथ के लिए मोटे दल की लकड़ी की आवश्यकता पड़ी तो सैनिकों ने इसी पेड़ को काटने का सुझाव दिया इस पर स्वामी हरिदास ठाकुर विचलित होकर चैतन्य महाप्रभु जी ने शिकायत रूप में स्मरण किया और पुन: अपने भजन में बैठ गए दूसरे दिन जब राजा के सैनिक उस पेड़ को काटने के लिए गए तो वह पेड़ खोखला और टेढ़ा-मेढ़ा हो गया जो आज भी मौजूद है. इस स्थान को हम सिद्ध बकुल के नाम से जानते हैं. तभी तो कहते हैं भगवान अपने भक्तों के बस में है.

पुरी में ऐसे ही एक मारकंडा सरोवर है जिसके तट पर मार्कंडेय मंदिर स्थित है इस मंदिर का शिवलिंग फटा हुआ है. कहते हैं, मार्कंडेय ऋषिने अपनी तपस्या से शिवजी को प्रसन्न किया और शिव जी से वरदान मांगा कि मुझे एक पुत्र की प्राप्ति हो शिव जी ने वरदान दिया लेकिन उस पुत्र की आयु केवल 7 वर्ष ही निर्धारित होगी. कालांतर में ऋषि पुत्र जब 7 वर्ष का होने लगा तब उन्हे इस बात की चिंता सताने लगी कि अब इसकी मृत्यु निश्चित है. तब मार्कंडेय ऋषि ने महामृत्युंजय मंत्र की रचना की.....

ॐ हौं जूं स: ॐ भूर्भुव: स्व:

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्

ॐ स्व: भुव: भू: ॐ स: जूं हौं ॐ.

और अपने पुत्र को कहा तुम इस मंत्र का जाप करो. पुत्र, पिता की आज्ञा से इसी शिव मंदिर में उपरोक्त महामृत्युंजय मंत्र का जाप करने लगा जब उसकी मृत्यु के रूप में यमराज आए तो शिवजी स्वयं इसी शिवलिंग से फटकर प्रकट हो गए और ऋषि पुत्र को सदा के लिए अमर कर दिया. भारतीय संस्कृति के शिव पुराण के अनुसार महामृत्युंजय मंत्र का जाप करने से 'काल' को भी जीता जा सकता है.

मैं, अपने पुरी के तीन दिवसीय प्रवास के दौरान यह कह सकता हूं कि पुरी का जगन्नाथ धाम एक 'भारतीय संस्कृति' का आध्यात्मिक केंद्र बिंदु है.

जय जगन्नाथ....!

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारत की अभेद संस्कृति

- बिक्रम साव
सहायक प्रबंधक - राजभाषा
क्षेत्रीय कार्यालय , अकोला

अयं निज: परो वेति गणना लघुचेतसाम् .
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् .

भारत एक विशाल और समृद्ध संस्कृति का वाहक है . संस्कृति किसी समाज और समुदाय की वह इकाई है जिसके माध्यम से उसके ऐतिहासिक, भौगोलिक और एकता का परिचय प्राप्त होता है. साहित्यकार रामधारी सिंह दिनकर का कथन है- 'संस्कृति का स्वभाव है कि वह आदान-प्रदान से बढ़ती है. जब भी दो देश वाणिज्य-व्यापार अथवा शत्रुता या मित्रता के कारण आपस में मिलते हैं, तब उनकी संस्कृतियाँ एक-दूसरे को प्रभावित करने लगती हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे दो व्यक्तियों की संगति का प्रभाव दोनों पर पड़ता है. संसार में शायद ही ऐसा कोई देश हो जो यह दावा कर सके कि उस पर किसी अन्य देश की संस्कृति का प्रभाव नहीं पड़ा है. इसी प्रकार, कोई जाति भी यह नहीं कह सकती कि उस पर किसी दूसरी जाति का प्रभाव नहीं है.'

- भारत एक विविधता प्रधान देश होने के साथ साथ एकता प्रधान भी है. भारत में द्रविड़ और आर्य तथा किरात और पारसी जाति की आगमन ने आरंभ में भारत की संस्कृति की नींव रखी. इसके पश्चात भारत में धार्मिक आंदोलन का सूत्रपात हुआ और वैदिक धर्म तथा संस्कृति की सृष्टि हुई जिसके अंतर्गत वर्णव्यवस्था, जातिप्रथा तथा बहुदेववाद को फैलाया गया और मनुवाद का चारों ओर बोलबाला हो गया. धीरे धीरे इस वर्चस्ववादी वर्ग ने भारत के विशाल क्षेत्र में क़ब्ज़ा कर लिया और उनके द्वारा किए जा रहे अत्याचार और अनैतिक आचरण के खिलाफ कुछ वर्ग और समुदाय ने विद्रोह छेड़ दिया इसमें सबसे पहला वर्ग था मध्यम वर्ग जिसमें से निकलने वाला पहला आंदोलन था - जैन धर्म आंदोलन . जिसने अहिंसा और नास्तिकता को बढ़ावा दिया तथा मूर्तिपूजा और बली प्रथा का खंडन किया .

- जैन धर्म आंदोलन के साथ ही जिस आंदोलन का सूत्रपात हुआ, जिसके सिद्धान्त पूरे विश्व में आज भी विद्यमान है वह है - बौद्ध धर्म आंदोलन, जिसके संस्थापक थे गौतम बुद्ध. गौतम बुद्ध ने दुखवाद तथा आष्टांगिकमार्ग का जो सिद्धान्त दिया वह आज भी विश्व प्रसिद्ध है . बौद्ध धर्म ने निवृत्ति का प्रचार किया और मूर्तिपूजा, बहुदेववाद, जातिप्रथा का खंडन किया और सामाजिक जागरूकता , एकता को स्थापित करने का भर्सक प्रयास भी किया.

- मुसलमानों का भारत आगमन आठवीं सदी के आरंभ में हुआ और इसके साथ ही एक नयी संस्कृति का उदय हुआ. मुसलमान आक्रांताओं ने एक ओर जहाँ भारत के धार्मिक स्थलों और ऐतिहासिक धरोहरों को तोड़ना शुरू किया तो वहीं दूसरी ओर अपनी इस्लाम संस्कृति की नींव भी कायम की. इस्लाम ने भारत की संस्कृति को अपने हिसाबन तोड़ने और जोड़ने की कोशिश की. इस्लाम संस्कृति की सबसे सम्पन्न और प्रभावी चरण अकबर महान के शासन काल में हमें देखने को मिलता है. अकबर जैसे महान सम्राट ने 1556 ईसवी में 15 वर्ष की उम्र में राजगद्दी पर बैठ अपने समय के भारत को तरक्की की बुलंदियों तक पहुंचा दिया जिसके पीछे इनकी राजपूत नीति और धार्मिक सद्भावना की नीति थी. अकबर ने अपने दरबार में तानसेन और नवरत्न की स्थापना कर भारतीय संस्कृति को एक नया आयाम दिया था. अकबर तथा उसके बाद के वंशज ने भारतीय संस्कृति को कई धरोहर प्रदान किया. ताजमहल, बुलंद दरवाज़ा, लाल किला, जामा मस्जिद, हुमायूँ का मकबरा, कुतुब मीनार, आगरा किला, अकबर का मकबरा, फ़तेहपुर सिकरी, दीवान ए आम, दीवान ए ख़ास, रंगमहल, हवामहल , हीरामहल, सफदरजंग मकबरा ,बीबी का मकबरा, परी महल, अकबर का किला, मयूर सिंहासन, लाहौर का किला, जहाँगीर का मकबरा, मोती मस्जिद, शीश महल, शाह बुर्ग, नहरे बहिश्त, शाहजहाँनाबाद, मोती महल आदि स्मारक मुगलकालीन संस्कृति ने भारतीय संस्कृति को उपहार स्वरूप प्रदान किया.

- भारत के अंदर मुसलमानों का राज 1707 ईसवी तक रहा परंतु इसी बीच अंग्रेजों का आगमन हो चुका था. 24 अगस्त 1608 ईस्वी को अंग्रेज़ भारत के सुरत में व्यापार के उद्देश्य से आए तथा धीरे धीरे व्यापार के बहाने पूरे भारत भर में अंग्रेज़ फैल गए और फिर भारत की शासन प्रणाली को भी अपने वश में कर लिया. 1757 ईसवी के प्लासी के युद्ध के माध्यम से अंग्रेजों ने भारत में अपनी जड़ें मजबूत की और धीरे धीरे बंगाल - बिहार- उड़ीशा से पूरे उत्तर भारत और मध्य भारत तक अपने साम्राज्य का विस्तार कर लिया. साम्राज्य विस्तार

के साथ साथ पाश्चात्य संस्कृति का प्रचार भी उन्होनें ज़ोर शोर से किया.

- भारत में दो सौ वर्ष के शासन के साथ ही अंग्रेजों ने पाश्चात्य संस्कृति की नींव रखने के साथ साथ कई स्मारकों का भी निर्माण करवाया जिसमें हावड़ा का पुल, विक्टोरिया मेमोरियल, भारतीय राष्ट्रीय पुस्तकालय, गेटवे ऑफ इंडिया, इंडिया गेट, कोलकाता का राजभवन, भारत की संसद, फोर्ट विलियम, राष्ट्रपति भवन, सेंट पॉल केथेड्रल, राइटर्स बिल्डिंग कोलकाता, बंबई उच्च न्यायालय, फोर्ट सेंट जॉर्ज चेन्नई आदि अत्यंत विख्यात है.

- पाश्चात्य संस्कृति का हमारी भारतीय संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ा. खाने-पीने की दृष्टि से भारतीय बर्गर, पिज़्ज़ा, कोल्ड ड्रिंक आदि की ओर बढ़ने लगे तथा वेश भूषा में भी पाश्चात्य संस्कृति का खुलापन दृष्टिगोचर होने लगा भारतीय जीवनशैली में भी पाश्चात्य शैली का समावेश हो गया जिसके कारण पूंजीवाद को बढ़ावा मिला और बाज़ारवाद भारत में हावी हो गया .

- भारत की संस्कृति विश्व की सबसे गतिशील संस्कृति और प्राचीन संस्कृति के रूप में विश्व विख्यात है और सबसे ख़ास बात यह है कि भारत की संस्कृति एक सर्वग्राही संस्कृति है , इसने प्राचीन काल से अब तक सभी आगमन कर्ताओं की संस्कृति को केवल अपनाया ही है.

- यूनेस्को ने भारत के 14 विरासतों को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में शामिल किया है -

  1-रामलीला को 2008 में, 2-वैदिक मंत्रों के पाठ करने की परंपरा, 3-कूडियाट्टम-केरल, 4-रम्माण त्योहार-उत्तराखंड, 5-मुडियेट्टु-केरल, 6-कालबेलिया-राजस्थान, 7-छऊ नृत्य, 8-बौद्ध धर्म ग्रंथों के पाठ करने की परंपरा, 9- संकीर्तन-मणिपुर, 10-पंजाब-ठठेरा धातु हस्तशिल्प, 11-योग, 12-नवरोज, 13-कुंभ मेला, 14-कोलकाता की दुर्गा पूजा .

- यूनेस्को ने भारत के 11 क्षेत्र को जैवमंडल रिजर्व में शामिल किया है -

  1- अगस्त्यमाला जैवमण्डल आरक्षित क्षेत्र, 2 - अचाकनमार - अमर कंटक जीवमंडल आरक्षित क्षेत्र, 3- कंचनजंगा संरक्षित जैवमंडल, 4 - ग्रेट निकोबार जीवमंडल आरक्षित क्षेत्र, 5 - नंदा देवी बायोस्फियर रिजर्व, 6- नीलगिरी बायोस्फियर रिजर्व, 7- नोकरेक संरक्षित जैवमंडल, 8 - पचमढ़ी बायोस्फियर रिजर्व, 9- मन्नार की खाड़ी जीवमंडल आरक्षित क्षेत्र, 10- सिमलीपाल बायोस्फियर रिजर्व, 11- सुंदरवन बायोस्फियर रिजर्व

- यूनेस्को ने भारत के 3 क्षेत्र को रचनात्मक शहरों के नेटवर्क में शामिल किया है -

  1- चेन्नई, 2- जयपुर, 3- वाराणसी

- यूनेस्को ने भारत के कई स्थलों को विश्व धरोहर स्थल में शामिल किया है, जिसमें प्रमुख है -

  दिल्ली का कुतुबमीनार, धौलावीरा, नंदा देवी और फूलों की घाटी, पश्चिमी घाट, रानी की वाव, सांची का बौद्स्तूप, लाल किला परिसर, सूर्य मंदिर कोणार्क, फ़तेहपुर सिकरी, छत्रपति शिवाजी टर्मिनस .

- यूनेस्को ने भारत के कुछ स्मृति कथा को संसार की स्मृति में शामिल किया है, जिनमें है -

  ऋग्वेद, गिलगित पाण्डूलिपि, तारीख़-ए-खानदान-ए-तैमूरिया, मैत्रेयवराकरण,शांतिनाथ चरित्र, एशियाई तमिल ताड़ पत्ता पाण्डुलिपि अध्ययन संस्थान, डच ईस्ट इंडिया कंपनी का अभिलेख, पांडिचेरी डाक्यूमेंट्री विरासत में सैव पाण्डुलिपि, लघुकालचक्रतंत्र राजटिका (विमलप्रभा)

- भारत से पूरी दुनिया के लिए एक ही संदेश जाता है -

  मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
  हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा !

  - अल्लामा इकबाल

- भारतीय संस्कृति मुहब्बत की रवानगी से भरी हुई है. भारत में अतिथियों को भी भगवान माना जाता है - अतिथि देवो भव: और सभी के लिए स्नेह बरसाती भारत की धरती सबको अपने खुले बाहों में समेटती आई है , कैफ़ी आज़मी ने कहा है - मेरी दुनिया में न पूरब है, न पच्छिम कोई सारे इनसान सिमट आये खुली बाहों में

- हम भारतीयों तथा भारत में आए विश्व के तमाम लोगों ने भारत को एक अविश्वसनीय और अतुलनीय संस्कृति प्रदान की है जो पूरे विश्व में एक शानदार उदाहरण प्रस्तुत करती है कि कैसे कोई देश आक्रमण कर्ताओं से भी अपने देश को समृद्ध बना सकते है. अत: यही सभी उपरोक्त कारक भारत की संस्कृति को एक अभेद संस्कृति बनाते है और आज प्रत्येक भारतीय को अपने संस्कृति पर गर्व है.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

बिहू

श्री संतोष कुमार मिश्रा
संकाय सदस्य/मुख्य प्रबंधक
सर एसपीबीटी महाविद्यालय, मुंबई.

प्रस्तावना: लोक उत्सव पद दो विशेष अर्थ वाले शब्द लोक एवं उत्सव की संधि से बना है. इसमें लोक शब्द का अभिप्राय जन समुदाय से है एवं उत्सव शब्द का अभिप्राय मानव जीवन में शुभ अवसर आने अथवा आने की कल्पना से प्राप्त होने वाले आनंद की अनुभूति से है. सामान्य अर्थों में लोक उत्सव एवं त्योहार में कोई विशेष भिन्नता नहीं है फिर भी इनके मध्य एक महीन रेखा है जो लोक उत्सव को त्यौहारों से भिन्न बनाती है. त्यौहार जहां मानव जाति के एक विशेष वर्ग, जाति, धर्म अथवा समुदाय द्वारा मनाये जाते हैं वहीं लोक उत्सव किसी वर्ग, जाति, धर्म की सीमा से मुक्त होता है एवं समान भौगोलिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश में रहने वाले लोगों के द्वारा मनाया जाता है.

लोक उत्सव का महत्व: भारत विविधताओं से भरा एक समृध्द देश है. भारत देश की विशाल आबादी इसके 28 राज्य एवं 8 केंद्रशासित प्रदेशों में निवास करती है. देश के इन प्रदेशों में भौगोलिक विविधताओं के साथ-साथ भाषिक एवं सांस्कृतिक विविधताएं भी हैं, जो इन्हें एक विशिष्ट पहचान प्रदान करती हैं. विभिन्न भौगोलिक स्थितियों में विभिन्न भाषाओं से जुडे एवं विभिन्न संस्कृतियों में लिपटे, इन प्रदेशों में विभिन्न प्रकार के लोक उत्सव मनाए जाते है. इन लोक उत्सवों के माध्यम से न केवल एकता, हर्षोल्लास एवं सद्भावना पर आधारित सुखमय मानव जीवन की कल्पना की जाती है, बल्कि ये लोक उत्सव इन प्रदेशों की सभ्यता एवं संस्कृति को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलाते हैं. इन लोक उत्सवों का विभिन्न वर्ग एवं स्तर में जीवन यापन कर रहे प्रदेश-वासियों, विशेषकर नई पीढी को प्रदेश की सभ्यता एवं संस्कृति से जोडे रखने में बडा योगदान रहता है. लोक उत्सव को मनाने से मानव संबन्धों में घनिष्ठता बढती है एवं मानव इनके माध्यम से एकता एवं बंधुत्व के सूत्र में बंधे रहते हैं. इनसे भाइचारे की भावना बढकर यह अवधारणा सुदृढ होती है कि हम सब एक हैं.

भारत के लोक उत्सव: हमारे देश को त्योहारों एवं लोक उत्सवों का देश माना जाता है जिसे देखने और समझने के लिए न केवल देशवासी एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में जाते हैं, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक भी इसका आनंद लेने के लिए भारत-भ्रमण करते हैं. लोक उत्सवों का न केवल सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व होता है बल्कि इनका आर्थिक महत्व भी होता है.

देश के प्रमुख लोक उत्सवों में गुजरात का उत्तरायण, पंजाब की बैसाखी, उत्तर प्रदेश का ताज महोत्सव, बिहार का राजगीर महोत्सव, ओडीशा का कोणार्क महोत्सव, मध्य प्रदेश का ओरछा उत्सव, कर्नाटक की उगादी, तमिलनाडू का पोंगल एवं केरल का ओणम प्रसिध्द है.

देश का उत्तर-पूर्वी क्षेत्र भौगोलिक परिस्थितियों के कारण अल्पविकसित जरूर है परंतु उत्तर-पूर्वी राज्य सांस्कृतिक रूप से अत्यंत समृध्द हैं. उत्तर-पूर्वी राज्यों में कई लोक उत्सव मनाए जाते हैं जिसमें असम का बिहू, मणिपुर की संगाई, अरूणाचल प्रदेश का लोसर, नागालेंड का हार्नबिल एवं सिक्किम का लोसूंग प्रमुख है.

असम का राष्ट्रीय त्योहार (महोत्सव) - बिहू: बिहू शब्द सुनते ही असम की नैसर्गिक सुंदरता, पारंपारिक परिधान में अनोखे वाद्ययंत्र बजाते युवाओं की टोली एवं हर्षोल्लास के साथ नृत्य करती प्रदेश की युवतिओं के समूह की छवि मस्तिष्क के पटल पर उमडने लगती है. बिहू महोत्सव असम प्रदेश की जनता के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक ताने-बाने की झलक दिखती है. दुनिया भर के असमी प्रवासी बिना उनके जाति, धर्म और विश्वास भेद के पूरे धूमधाम से बिहू मनाते हैं. बिहू शब्द असम के विश्वप्रसिध्द बिहू नृत्य एवं बिहू लोकगीत दोनो का प्रतिनिधित्व करता है.

बिहू शब्द दिमासा लोगों की भाषा से ली गई ''बिशू'' का अपभ्रंश है. दिमासा प्राचीन काल से एक कृषि समुदाय है, जो ब्राई शिवराई को अपना सर्वोच्च देवता मानते हैं. जिनके नाम से बिशू शब्द की उत्पति हुई जिसमें 'बि' का अर्थ है 'पूछना' और 'शू' का अर्थ 'शांति' है. बिशु शब्द कालांतर में भाषाई तरजीह को समायोजित करने के लिए 'बिहू' बन गया. अधिकांश भारतीय उत्सवों की भांति 'बिहू' भी कृषि के साथ जुडा हुआ है, जिसे पारंपारिक असमिया समाज, जो मुख्य रूप से कृषि पर ही निर्भर है, प्राचीन काल से मना रहा है.

बिहू उत्सव एक वर्ष में तीन बार मनाया जाता है. जनवरी महीने के मध्य में 'भोगाली' बिहू मनाया जाता है, इसे माघ बिहू भी कहते

हैं. अप्रैल के मध्य में 'बोहाग' बिहू मनाया जाता है, जो रोंगाली बिहू या हतबिहू के नाम से भी जाना जाता है. तीसरी बार ये उत्सव अक्टूबर के मध्य में मनाया जाता है जिसे कंगाली या काति बिहूके नाम से जानते है.

रोंगाली बिहू (बोहाग बिहू) - बोहाग बिहू से असम नववर्ष का प्रारंभ माना जाता है. असमिया केलेंडर बैशाख महीने से शुरू होता है और यह बिहू सात दिन तक अलग-अलग रिति रिवाज के साथ मनाया जाता है. इसमें प्रथम दिन को गाय बिहू कहा जाता है. इस दिन लोग सुबह अपनी गायों को नदी में नहलाते है जिसके लिए रात में ही भिगोकर रखी गई कलई दाल एवं कच्ची हल्दी का प्रयोग किया जाता है. उसे बाद में गायों को लौकी, बेंगन आदि खिलाया जाता है. माना जाता है कि ऐसा करने से गाय सालभर कुशलतापूर्वक रहती है. गायों को नई रस्सी से बांधा जाता है एवं उनके रहने के स्थान में औषधिय गुण वाले पौधों को जलाकर मच्छर मक्खी भगाए जाते हैं. यह उत्सव वसंत ऋतु के आगमन की खुशी को दर्शाने के लिए मनाया जाता है. इसी समय धरती पर बारिश की पहली बूंदे पडती है और पृथ्वी नए रूप से सजती है. इस समय पेडों और लताओं में ढेर सारे रंग बिरंगे फूल दिखते हैं. रोंगाली के पहले दिन लोग प्रार्थना, पूजा और दान करते है. लोग इस दिन नदियों एवं तालाबों में कच्ची हल्दी से पवित्र स्नान करते हैं. सभी लोग इस दिन नए कपडे पहनते है और दही, चिवडा एवं मिठाइयां खाते हैं.

बिहू के दौरान ही युवक एवं युवतियां अपने जीवन साथी को चुनते हैं, इसलिए असम में बैशाख महीने में ज्यादातर विवाह संपन्न होते हैं.

भोगाली बिहू: माघ महीने की संक्रांति की पहले दिन से भोगाली बिहू मनाया जाता है. इस समय तिल, चावल, नारियल, गन्ना इत्यादि फसल भरपूर होती है और इनसे नाना प्रकार की खाद्य सामग्री बनाई और खिलाई जाती है. इस त्यौहार के आरंभ में सभी लोग अग्नि देवता की पूजा करते हैं. इस दिन बांस से एक ऊंची आकृति बनाई जाती हे जिसे 'मेजी' कहते हैं. सूर्योदय से पहले सभी लोग किसी नदी या तालाब में स्नान करते हैं. स्नान के बाद मेजी को जलाकर तापने का रिवाज हैं. उसके बाद नाना प्रकार के पेठा, दही-चिवडा खाकर त्योहार का आनंद लेते हैं. इसी दिन पूरे देश में संक्रांति, लोहडी, पोंगल इत्यादि त्योहार मनाया जाता है.

कंगाली बिहू (काति बिहू) - धान असम की प्रधान फसल है, इसलिए जब धान की फसल में अन्न लगना शुरू होता है, उस समय नए तरह के कीडे फसल को नष्ट करने लगते हैं. इससे बचाने के लिए कार्तिक महीने की संक्रांति के दिन शुरू होता है काति बिहू, उस समय फसल हरी-भरी नहीं होती है इसलिए इसे कंगाली बिहू कहा जाता है. इस दिन आंगन में तुलसी पौधा लगाया जाता है और दिया जलाकर प्रसाद चढाया जाता है. ईश्वर से प्रार्थना की जाती है कि फसल को सुरक्षित रखें.

बिहू के कार्यक्रम: बिहू के अवसर पर संक्रांति के दिन से असम वासी बिहू नृत्य करते हैं. इसमें 20-25 लोगों की मंडली होती है, जिसमें युवक और युवतियां साथ-साथ ढोल, बांसूरी, पेपा, गगना, ताल की थाप पर पारंपारिक परिधान पहनकर बिहू नृत्य करते हैं. इसके साथ-साथ खेतों में पहली बार के लिए हल भी चलाया जाता है. मान्यता है कि बिहू पर्व के दौरान ढोल बजाने से आसमान में बादल आ जाते हैं जिससे बारिश शुरू हो जाती है और खेती अच्छी होती है.

बिहू के व्यंजन: बिहू के खास मौके पर लजीज व्यंजन भी बनाए जाते हैं. बोहाग बिहू के मौके पर असम के लोगों के बीच दही और चिवडा खाने की प्रथा है. इसके अलावा नारियल, चावल, तिलल, दूध का उपयोग करके लजीज पकवान बनाए जाते हैं. लोग मच्छी-पीतिका, बैंगेना-खार, छिला-पीठा जैसे मुख्य व्यंजन बनाते हैं और लोगों को खिलाते हैं.

भारत के सभी राज्य के अपने लोक उत्सव हैं जो केवल उसी राज्य में मनाए जाते हैं. बिहू भी उनमें से एक है जो असम में मनाया जाता है. हर उत्सव का अपना एक विशेष महत्व होता है. सांस्कृतिक परंपराएं दुनिया भर में लोक उत्सव को बहुत ही मनोरंजक और लोकप्रिय बनाती है. बिहू असम की भावना से जुडा हुआ है और इस प्रदेश की एकता का प्रतीक है. बिहू असम की सांस्कृतिक पहचान है और असम की संस्कृति बिहू की पहचान हैं.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

छत्तीसगढ़ राज्य में बस्तर जिले की आदिवासी संस्कृति और विरासत

भक्ति सरकार
वरिष्ठ प्रबंधक-राजभाषा
आंचलिक कार्यालय, हैदराबाद

सात जिलो में विभाजित है बस्तर संभाग : बस्तर का मुख्यालय जगदलपुर जो बस्तर संभाग में सात जिलो में विभाजित है - कोण्डागॉव, कांकेर, नारायणपुर, बीजापुर, सुकमा,जगदलपुर,दंतेवाड़ा.

बस्तर में बोली जाने वाली भाषा : बस्तर में 36 बोलियां बोली जाती थीं लेकिन अब गोंडी, हल्बी, भतरी, धुरवी, परजी, माड़ी जैसी कुछ-कुछ बोलियां ही बची हैं जो बस्तर की कुछ बोलियाँ संकट ग्रस्त हैं और इनके संरक्षण व संवर्धन की जरूरत है.

बस्तर की दो दर्जन से अधिक बोलियां विलुप्त हो चुकी हैं.

जीवन यापन के उपाय- सीमित खेती किसानी के बावजूद ये मुख्यत: वनोपज पर ही आश्रित होते हैं. यहाँ आम तौर पर धान, कोदो, कुटकी, ज्वार, बाजरा आदि की फ़सल होती है और वे साल मे एक फ़सली खेती ही करते हैं. ये जिस जगह खेती करते हैं आम तौर पर वहीं घर बनाकर रहते हैं और उस घर मे किसी की मृत्यु हो जाने पर थोड़ा हटकर दूसरा घर बनाते हैं. जंगलों से इमली, महुआ, लाख, गोंद और चिरौंजी आदि इकट्ठा करते हैं. अपनी आवश्यकता के लिये वे मुर्गी और जानवर भी पालते है नशे के लिये घर-घर मे महुये की शराब बनाई जाती है और ताड़ के पेड़ से सल्फी या ताड़ी भी उतारी जाती है . जिसके साथ चखने में आम तौर पर आम के पेड़ पर पाई जाने वाली चीटियों को भूनकर चटनी बनाई जाती है जो चीटियां अम्लीय होने के कारण खट्टी लगती है . इस चटनी को चिपोड़ा कहते हैं.

इनके भोजन में अधिकतर उबाला हुआ चावल जिसे भात कहते हैं, उबाले गये चांवल का निथारा हुआ पानी जिसे पसिया कहते हैं, सब्ज़ियों की करी के अलावा सूखी मछली, पुटु यानि मशरूम और चपड़ा इत्यादि होते हैं. तीज त्योहार के अवसर पर आखेट किया जाता है और फ़िर सामूहिक भोजन, मदिरा-पान और नृत्य आदि की परम्परा भी है.

खाना पकाने के लिये मिट्टी के बर्तन और खाने के लिये पत्तों के बर्तन यानि दोना-पत्तल अर्थात् खाने के लिये हर बार नया बर्तन. बर्तन वे खुद ही बना लेते हैं; वैसे यह हाट बाज़ार मे भी उपलब्ध होता है.

यहां के साप्ताहिक हाट बाज़ार इनकी अर्थ व्यवस्था की रीढ़ होते हैं. या बाहरी दुनिया से इनका यहीं सम्पर्क होता है . यहां बाहरी जगत के अल्प पूंजी वाले व्यापारी सस्ती और लुभावनी चीज़ें बेचने आते हैं . वहीं बड़े व्यापारियों के दलाल भी आते हैं जो लाख, गोंद, हर्रा, बहेड़ा, इमली और चिरौंजी आदि को नमक और अन्य सस्ती चीज़ों से बदलकर शहर के बाज़ारों से खूब मुनाफ़ा कमाते हैं.

वेशभूषा- पुरुष आम तौर पर लंगोट या छोटा सा गमछा कमर मे बांधते हैं; जिसे वे लुंगी या धोती कहते हैं. सिर पर पगड़ी का भी चलन है और तीर-कमान या फ़रसा(चौड़े फ़ाल वाली कुल्हाड़ी) धारण करते हैं . स्त्रियां गाथि मारकर साड़ी लपेटती हैं. बालों को जूड़ा बांधकर मोतियों और फूलों से सजाती हैं.

विशेष अवसरों पर आदिवासियों के कपड़ों, आदिवासियों के प्रमुख माने जाने वाले सिरहा गुनिया के वस्त्रों और बायसन हार्न, गौड़,

माढ़िया, मुकुट, चोली, घाघरा हो या छोटी बांस की टोकरी, इन सब पर कौड़ी लगाकर उसे सजाने की और आभूषण बनाने की परंपरागत कला को काफी सराहा जाता है.

संस्कार-

मृत्यु संस्कार- मिस्त्र के पिरामिड़ तो पूरी दुनिया का ध्यान खींचते हैं, दुनिया के आठ आश्चर्य में शामिल हैं. लेकिन बस्तर में भी कुछ कम अजूबे नहीं है. यहां भी एक ऐसी ही अनोखी परंपरा है, जिसमें परिजन के मरने के बाद उसका स्मारक बनाया जाता है. भले ही वह मिस्त्र

जैसा भव्य न हो, लेकिन अनोखा जरूर होता है. इस परंपरा को मृतक स्तंभ के नाम से जाना जाता है. दक्षिण बस्तर में मारिया और मुरिया जनजाति में मृतक स्तंभ बनाए बनाने की प्रथा अधिक प्रचलित है. स्थानीय भाषा में इन्हें "गुड़ी" कहा जाता है. प्राचीन काल में जनजातियों में पूर्वजों को जहां दफनाया जाता था वहां 6 से 7 फीट ऊंचा एक चौड़ा तथा नुकीला पत्थर रख दिया जाता था. पत्थर दूर पहाड़ी से लाए जाते थे और इन्हें लाने में गांव के अन्य लोग मदद करते थे.

साथ ही किसी की मृत्यु हो जाने पर एक विशेष लय मे ढोल नगाड़े बजाकर संदेश भेजा जाता है जिसे सुनकर आस पास के लोग मृतक के घर जमा हो जाते हैं. यहाँ किसी वृद्ध की मृत्यु को शादी विवाह समझा जाता है और उसी तरह बाजे गाजे के साथ झूमते गाते शव यात्रा निकाली जाती है. मठ मे दारू मुर्गा, नाच-गाना, हास्य-व्यंग आदि के साथ आनंदोत्सव आयोजित होता है. पांच छः दिन पश्चात् बड़े काम यानि विशेष क्रिया कर्म का आयोजन होता है जिसमे मृतक के लिये शराब तथा भोजन, फ़ल, कांदा, चावल, बर्तन कपड़ा आदि रखा जाता है. तालाब मे कलश रखकर तेल हल्दी चढ़ाते हैं. तत्पश्चात् परिवार के सभी लोग मिलकर मृतक की आत्मा को ढूंढते हैं. तालाब का जो जीव सबसे पहले मिलता है उसे ही मृतक की आत्मा माना जाता है और जिसे सबसे पहले मिलता है उसे ही मृतक से सबसे अधिक प्रेम करने वाला माना जाता है. इस जीव को डूमा देव कहा जाता है. अब डूमा देव की शादी का मंडप गड़ाकर मदिरापान, नाच-गाना तथा मृतक की जीवन के बारे मे गायन होता है. मृतक की याद मे पेड़ लगाने की भी प्रथा है. यहाँ शव को जलाने या दफ़नाने दोनो प्रथाओं का चलन है.

जन्म सम्बन्धित संस्कार- यहां गर्भवती महिला को घर से बाहर डेरा बनाकर रखने की प्रथा है; जहां वह अकेली ही रहती है और गर्म पानी से नहाती है. प्रसव पीढ़ा होने पर ये मानसिक और शारीरिक रूप से सुदृड़ महिलायें बिना किसी की सहायता के, अकेले अपने ही दम पर सन्तान को जन्म देती हैं. बच्चा पैदा होने के बाद वह स्वयं नहा धोकर कपड़े पहनकर आ जाती. शिशु जन्म के दौरान पुरुष वर्ग चावल लेकर देवों का आव्हान करते रहते है. जन्म देने के पश्चात् महिला को आग के पास सुलाया जाता है. प्रसूता महिला की सास तथा जेठानी मिलकर बच्चे के नाल को एक दोना पत्तल मे लपेटकर आग के पास रख देते हैं जहाँ वह धीरे-धीरे जलकर खत्म हो जाता है. प्रसूता को अरहर की दाल का पानी या आटे का हरीला पीने को दिया जाता है. इसके पश्चात् पन्द्रह दिनो तक हांडी छुपाने आदि के नेग दस्तूर होते हैं जिसमे एक महिला पुजारन जिसे गायतिन कहते हैं, मां बच्चे को नहला धुलाकर तेल लगाकर और कलश जलाकर आशिर्वाद की रस्म अदा कराती है. घर मे महुये की शराब उतारी जाती है. देवों को इस शराब का भोग लगाकर पीने पिलाने, नाचने गाने तथा भोजन का दौर चलता है.

विवाह संस्कार- आम तौर पर यहां रिश्ते के अंदर ही यानि ममेरे-.

फुफ़ेरे भाई बहनो में विवाह को प्राथमिकता रहती है. ऐसा सम्भव न होने पर समुदाय अथवा गांव के अंदर विवाह को ही उचित माना जाता है. इसके अलावा भी विवाह के कई रूप और विधान मौजूद है.

पैठुल विवाह- लड़की अपने पसंद के लड़के के घर मे पैठ जाती या घुस जाती है. अब यदि लड़का भी सहमत हो जाये तो, परिवार के एतराज़ के बावजूद इनके विवाह को समुदाय की अनुमति प्राप्त हो जाती है. यह बैगा और कई अन्य जनजातियों मे प्रचलित है; और पैठुल बिहाव या पैठुल विवाह के नाम से जाना जाता है.

भगेली विवाह- भगेली बिहाव या भगेली विवाह मे लड़का लड़की दोनो की आपसी सहमति होती है. जब लड़की के माता पिता रिश्ते के विरोध मे हों तो लड़की रात मे अपने घर से भागकर अपने प्रेमी के घर के छप्पर के नीचे शरण लेती है. लड़का एक लोटा पानी अपने छप्पर पर बहाता है जिसे लड़की अपने सिर पर लेती है; तब लड़के की माँ लड़की को अपने घर के भीतर ले जाती है. गांव का मुखिया या प्रधान तब लड़की को अपनी शरण मे लेता है और लड़की के भगेली होने की सूचना उसके परिवार को देता है. रात मे मड़वा गड़ाकर विवाह कर दिया जाता है और लड़की के परिवार को भी किसी न किसी तरह भेंट आदि देकर मना लिया जाता है.

उढ़रिया विवाह- यह साधारण प्रकार का प्रेम विवाह ही है. जब परिवार या समुदाय सहमत न हों तब लड़का लड़की किसी मेले-

मढ़ई(साप्ताहिक या वार्षिक हाट-बाज़ार) मे मित्रों की सहायता से मिलकर भाग जाते हैं . फ़िर किसी दूसरे गांव मे कोई परीचित अथवा रिश्तेदार के घर जाकर विवाह रचा लेते हैं . परिवार वाले उन्हें ढूंढकर वापस लाते है . अगर विवाह समुदाय से बाहर हुआ हो तो बहिष्कार का सामना करना पड़ता है लेकिन अंतत: कुछ दण्ड आदि के बाद मान्यता प्राप्त हो ही जाती है .

चढ़ विवाह- इसमे लड़का बारात लेकर लड़की के घर जाता है और विधि विधान पूर्वक विवाह रचाकर वधु को अपने घर ले आता है .

पठोनी विवाह- इस विवाह मे लड़की बारात लेकर, लड़के के घर जाती है और विधि-विधान पूर्वक विवाह रचाकर वर को विदा कराकर अपने घर ले आती है .

लमसेना विवाह- इस पद्धति मे शादी के इच्छुक युवक को कन्या के घर जाकर एक-दो वर्ष या इससे अधिक अवधि तक रहना और स्वयं को खेती-बाड़ी तथा परिवार के हर कार्य के योग्य सिद्ध करना होता है . युवक को लड़की के साथ पति की तरह ही रहने की अनुमति तो होती है किंतु लड़की के परिवार की सन्तुष्टि के पश्चात ही विवाह की अनुमति मिलती है . बहुदा विवाह की अनुमति मिलने तक एक दो सन्ताने भी हो चुकी होती है .

घोटुल विवाह- उपरोक्त विवाह पद्धतियों और संस्कारों के अलावा एक बड़ी ही महत्वपूर्ण प्रथा है घोटुल . वैसे प्रथा से ज़्यादा यह संस्था होती है, जिसका अपना भौतिक स्वरूप होता है . जहां से यह संस्था संचालित होती है उस गृह को घोटुल कहा जाता है . यह गांव से बाहर एक घर होता है .

घोटुल वास्तव मे बाल्यकाल और गृहस्थ जीवन के बीच की एक महत्वपूर्ण कड़ी है . हर अविवाहित युवक और युतियाँ इसकी अनिवार्य सदस्य होते हैं. इसके सदस्य युवक 'चेलिक' तथा युवतियां 'मोटियारिन" कहलाती हैं . यहां के मुखिया को सिलेदार या सिरदार कहते हैं . अविवाहित युवक और युवतियों को रात मे अपने माता पिता का घर छोड़ यहां आना अनिवार्य होता है . यहां से बिना कारण के अनुपस्थित रहना अपमान या उपहास का कारण हो सकता है . वे यहां न सिर्फ़ यौन शिक्षा ही प्राप्त करते और नाचते गाते हैं बल्कि सामाजिक जीवन और सामाजिक सम्बंधों के बारे मे सीखते हैं और समाज के साथ अपने सम्बंध तथा दायित्व के प्रति सजग होते है . और भविष्य के समाज के साथ अपने सम्बन्ध विकसित करते हैं . देखा जाये तो घोटुल मे भविष्य का एक पूरा एक जनजातीय समाज अपनी विकासशील अवस्था मे विद्यमान होता है.

कोई भी सामाजिक कार्य होने पर घोटुल के सदस्यों की सक्रियता देखते ही बनती है . हां यहीं वे अपने जीवन साथी का भी चुनाव कर लेते हैं . जो कि इस अवस्था मे बिल्कुल स्वाभाविक बात है .

इनके बीच किसी प्रकार के व्यापारिक सम्बन्ध नहीं होते . ब्याज या साहुकारी के लिये यहां कोई स्थान नही है . जैसे किसी को खेती के लिये बीज की ज़रूरत हो तो सब मिलकर उसे पूरा करेंगे और जब फ़सल आजायेगी वह उन्हे लौटा देगा . और यह सब इतनी स्वाभाविक प्रक्रिया है कि इसमे कोई कृतज्ञता या उपकार जैसी भावनाओं का कोई स्थान ही नहीं .

यहां आने वाला मेहमान भी किसी एक परिवार का मेहमान नहीं होता बल्कि सारा गांव मिलकर उसका आदर सत्कार करते हैं . गांव मे मेहमान के ठहरने के लिये 'थानागुड़ी' का प्रबंध होता है; जिसे हम मेहमानखाना या अतिथिगृह अथवा गेस्ट-हाऊस कहते हैं.

बस्तर के प्रसिद्ध त्यौहार : बस्तर की कुछ परम्पराएं तो हमें एक रहस्यमय संसार में पंहुचा देती हैं. वह अचंभित किए बगैर नहीं छोड़ती. वनवासियों के तौर तरीके हमें सोचने पर मजबूर करते हैं कि चांद पर पहुंच चुकी इस दुनिया में और भी बहुत कुछ है, जो सदियों पुराना है, अपने उसी मौलिक रूप में जीवित है. बुराई पर अच्छाई की जीत के प्रतीक दशहरे को देशभर में उत्साह के साथ मनाया जाता है. इस दिन भगवान राम ने लंकापति रावण का वध कर देवी सीता को उसके बंधन से मुक्त किया था. इस दिन रावण का पुतला जलाकार लोग जश्न मनाते हैं. लेकिन भारत में एक जगह ऐसी है जहां 75 दिनों तक दशहरा मनाया जाता है लेकिन रावण नहीं जलाया जाता है .

यह अनूठा दशहरा छत्तीसगढ़ के आदिवासी बहुल इलाके बस्तर में मनाया जाता है और 'बस्तर दशहरा' के नाम से चर्चित है. इस दशहरे की ख्याति इतनी अधिक है कि देश के अलग-अलग हिस्सों के साथ-साथ विदेशों से भी सैलानी इसे देखने आते हैं. बस्तर दशहरे की शुरुआत श्रावण (सावन) के महीने में पड़ने वाली हरियाली अमावस्या से होती है. इस दिन रथ बनाने के लिए जंगल से पहली लकड़ी लाई जाती है. इस रस्म को पाट जात्रा कहा जाता है. यह त्योहार दशहरा के बाद तक चलता है और मुरिया दरबार

की रस्म के साथ समाप्त होता है. इस रस्म में बस्तर के महाराज दरबार लगाकार जनता की समस्याएं सुनते हैं. यह त्योहार देश का सबसे ज्यादा दिनों तक मनाया जाने वाला त्योहार है.

देवी त्यौहार, तीज त्यौहार, चैतराई, आमाखानी, अकती, बीज खुटनी, हरियाली, इतवारी, नयाखाई आदि बस्तर के आदिवासियों के मुख्य त्यौहार हैं. आदिवासी समुदाय एकजुट होकर बूढ़ादेव, ठाकुर दाई, रानीमाता, शीतला,रावदेवता, भैंसासुर, मावली, अंगारमोती, डोंगर, बगरूम आदि देवी देवताओं को पान फूल, नारियल, चावल, शराब, मुर्गा, बकरा, भेड़, गाय, भैंस, आदि देकर अपने-अपने गांव-परिवार की खुशहाली के लिए मन्नत मांगते है.

बस्तर की प्रसिद्ध हस्तशिल्प कलायें : बस्तर के कला कौशल को मुख्य रूप से काष्ठ कला, बाँस कला, मृदा कला, धातु कला में विभाजित किया जा सकता है.

काष्ठ कला में मुख्य रूप से लकड़ी के फर्नीचरों में बस्तर की संस्कृति, त्यौहारों, जीव जंतुओं, देवी देवताओं की कलाकृति बनाना, देवी देवताओं की मूर्तियाँ, साज सज्जा की कलाकृतियाँ बनायी जाती है.

बांस कला में बांस की शीखों से कुर्सियां, बैठक, टेबल, टोकरियाँ, चटाई, और घरेलु साज सज्जा की सामग्रिया बनायीं जाती है.

मृदा कला में , देवी देवताओं की मूर्तियाँ, सजावटी बर्तन, फूलदान, गमले, और घरेलु साज-सज्जा की सामग्रियां बनायी जाती है.

धातु कला में ताम्बे और टिन मिश्रित धातु के ढलाई किये हुए कलाकृतियाँ बनायीं जाती है, जिसमे मुख्य रूप से देवी देवताओं की मूर्तियाँ, पूजा पात्र, जनजातीय संस्कृति की मूर्तियाँ, और घरेलु साज-सज्जा की सामग्रियां बनायीं जाती है.

एक बात और, शिक्षा के बारे मे यहां एक कहावत है- 'जो थोड़ा पढ़ा वह गांव से गया, जो ज़्यादा पढ़ा वह देश से गया .' यह बात शायद अपने समाज और संस्कृति से जुड़ाव की अभिव्यक्ति हो किन्तु इनकी संस्कृति को खतरा शिक्षा से नहीं बल्कि विकास और शिक्षा के नाम पर इन्हे इनकी ज़मीन और जड़ों से दूर करने के षड्यंत्रों से है . बहुत सम्भव है कि, भविष्य मे हम शहरों मे नुमाईशों और प्रायोजित किये जा रहे कार्यक्रम को ही इनकी जनजातीय संस्कृति मानने को मजबूर हो जायें . क्योंकि, हमारी सभ्यता, हमारी सोंच, सत्ता की भूख, बेशकीमती सम्पदा को हड़पने और मुनाफ़ा कमाने की हवस इनकी मौलिकता और अस्तित्व को निगलती जा रही है .

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारतीय संस्कृति

श्री रोहित कुमार
विधि अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, मेरठ

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति है जो लगभग 5,000 हजार वर्ष पुरानी है. विश्व की पहली और महान संस्कृति के रुप में भारतीय संस्कृति को माना जाता है. "विविधता में एकता" का कथन यहाँ पर आम है अर्थात् भारत एक विविधतापूर्ण देश है जहाँ विभिन्न धर्मों के लोग अपनी संस्कृति और परंपरा के साथ शांतिपूर्ण तरीकों से एक साथ रहते हैं. विभिन्न धर्मों के लोगों की अपनी भाषा, खाने की आदत, रीति-रिवाज़ आदि अलग हैं फिर भी वो एकता के साथ रहते हैं.

पूरे विश्व भर में भारतीय संस्कृति बहुत प्रसिद्ध है. विश्व के बहुत रोचक और प्राचीन संस्कृति के रुप में इसको देखा जाता है. अलग-अलग धर्मों, परंपराओं, भोजन, वस्त्र आदि से संबंधित लोग यहाँ रहते हैं. विभिन्न संस्कृति और परंपरा के रह रहे लोग यहाँ सामाजिक रुप से स्वतंत्र हैं इसी वजह से धर्मों की विविधता में एकता के मजबूत संबंधों का यहाँ अस्तित्व है.

भारत संस्कृतियों से समृद्ध देश है, जहाँ अलग-अलग संस्कृतियों के लोग रहते हैं. हम भारतीय लोग अपनी संस्कृति का बहुत सम्मान और आदर करते हैं. संस्कृति सबकुछ है जैसे दूसरों के साथ व्यवहार करने का तरीका, विचार, प्रथा जिसका हम अनुसरण करते हैं.कला, हस्तशिल्प, धर्म, खाने की आदत, त्यौहार, मेले, संगीत और नृत्य आदि सभी संस्कृति का हिस्सा हैं. भारतीय संस्कृति विभिन्नता में एकता का अनूठा संगम प्रस्तुत करती है.

भारत की विभिन्न संस्कृतियाँ

भाषा, धर्म और पंथ - भारत की राष्ट्रीय भाषा हिन्दी है हालाँकि विभिन्न राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों में लगभग 22 आधिकारिकभाषाएँ और 400 दूसरी भाषाएँ प्रतिदिन बोली जाती हैं. इतिहास के अनुसार, हिन्दू और बुद्ध धर्म जैसे धर्मों की जन्मस्थली के रुप में भारत को पहचाना जाता है. भारत की अधिकांशजन संख्या हिन्दू धर्म से संबंध रखती है. हिन्दू धर्म की दूसरी विविधता शैव, शक्त्य, वैष्णव और स्मार्ता है.

वेशभूषा और खानपान - भारत अधिक जनसंख्या के साथ एक बड़ा देश है जहाँ विभिन्न धर्मों के लोग अपनी अनोखी संस्कृति के साथ एकसाथ रहते हैं. देश के कुछ मुख्य धर्म हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन और यहूदी हैं. भारत एक ऐसा देश है जहाँ देश के अलग-अलग हिस्सों में भिन्न - भिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं. आमतौर पर यहाँ के लोग वेशभूषा, सामाजिक मान्यताओं, प्रथा और खाने की आदतों में भिन्न होते हैं.

पर्व और जयंतियाँ - विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमों सहित हम कुछ राष्ट्रीय उत्सवों को एकसाथ मनाते हैं जैसे गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, गाँधी जयंती आदि.

निष्कर्ष

कुछ कार्यक्रम जैसे बुद्ध पूर्णिमा, महावीर जयंती, गुरु पर्व आदि कई धर्मों के लोगों द्वारा एकसाथ मनाया जाते है. भारत अपने विभिन्न सांस्कृतिक नृत्यों जैसे शास्त्रीय (भरत नाट्यम, कथक, कथक कली, कुच्ची पुड़ी) और अपने क्षेत्रों के लोक नृत्यों के अनुसार बहुत प्रसिद्ध है. पंजाबी भाँगड़ा करते हैं, गुजराती गरबा करते हैं, राजस्थानी घुमर करते हैं, आसामी बिहू करते हैं. इसलिए भारत दुनियाभर में अपने विविध संस्कृतियों के लिए प्रसिद्ध है.

हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में दिया जाना अनिवार्य है.

एमएसएमई (सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग)

सूरज सिंह
सहायक प्रबंधक - राजभाषा,
क्षेत्रीय कार्यालय, गया

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग अर्थव्यस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है. लगभग 6 करोड़ सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग द्वारा देश की सकल घरेलू उत्पाद में एक-तिहाई का योगदान देते हैं और आबादी के एक बड़े हिस्से को विशेषकर असंगठित क्षेत्र में रो. जगार प्रदान करते हैं.

भारत में विनिर्माण क्षेत्र की तुलना में सेवा क्षेत्र को अधिक महत्व दिया जाता है, ऐसे में एम. एस. एम.ई.ने घरेलू उत्पादों को आयातित उत्पादों के समक्ष प्रतिस्पर्धी बनाया है. यह भारत की आत्मनिर्भरता की स्थिति को प्राप्त करने के साथ-साथ भारत की आर्थिक रणनीति को सुदृढ़ करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है.

एम. एस. एम.ई का भारत के सामाजिक- आर्थिक विकास में उल्लेखनीय योगदान रहा है, इस कारण इसे भारत की रीढ़ की हड्डी भी कहा जाता है. एम.एस.एम.ई. में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग को निम्नलिखित तरीकों से बांटा जाता है-

सूक्ष्म- वे उद्योग जिनमें 1 करोड़ रुपए तक का निवेश किया जाता है तथा जिसका वार्षिक क्रय-विक्रय या आवर्त 5 करोड़ रु से कम हो .

लघु- वे उद्योग जिनमें 10 करोड़ रुपए से कम का निवेश किया गया है और जिनका क्रय-विक्रय या आवर्त 50 करोड़ रुपए से कम हो .

मध्यम- वे उद्योग जिनमें 50 करोड़ रुपए से कम का निवेश किया गया है वहीं जिनका आवर्त 250 करोड़ रुपए से अधिक हो .

एम. एस. एम. ई. उद्योग भारतीय ग्रामीण क्षेत्र के औद्योगिकीकरण में भी अहम भूमिका निभा रहा है. लघु एवं मध्यम उद्योग पूरक इकाइयों की तुलना में बड़े उद्योग होते हैं जो देश के सामाजिक एवं आर्थिक रणनीति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं.

घरेलु उत्पादन में वृद्धि, न्यूनतम निवेश आवश्यकताएँ, लचीलापन, स्थानीय गतिशीलता, उचित घरेलू तकनीक विकसित करने की क्षमता और प्रशिक्षण प्रदान करके निर्यात बाज़ार द्वारा नए उद्यमियों के प्रवेश के माध्यम से एम. एस. एम.ई राष्ट्र के विकास राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है.

बैंकिंग क्षेत्र तक व्यापक पहुँच न होने के कारण अधिकांश एम. एस. एम.ई वित्तीय आवश्यकताओं के लिए गैर- बैंकिंग वित्तीय आवश्यकत्ता संस्थानों पर निर्भर है. ऐसे में गैर- बैंकिंग वित्तीय संस्थानों में पूंजी में तरलता आने के कारण एम. एस. एम. ई के क्षेत्र को भी कई तरह के दिक्कतों का सामना करना पड़ता है.

वर्तमान समय में एम.एस. एम. ई. में कुल 6 करोड़ तक हैं जिनमें से भी केवल 1 करोड़ ही जीएसटी व्यवस्था के अंतर्गत पंजीकृत है. इनमें से भी केवल कुछ लोग ही आयकर जमा करते हैं जिस कारण इस क्षेत्र के लोगों के डाटा के अभाव में ऋण एवं अन्य चीजों की व्यवस्था करने में मुश्किलों का सामना पड़ता है.

इसके अतिरिक्त , आधारभूत ढाँचा की कमी , बाज़ार तक न पहुँच पाना , कौशल विकास की कमी तथा प्रशिक्षण का अभाव एवं जटिल श्रम कानून भी एम . एस . एम . ई . के विकास में रोड़ा बन रही है.

एम . एस . एम.ई क्षेत्र का वृहद स्तर पर औपचारीकरण होना चाहिए . हालांकि इन उद्योगों का पंजीकरण एवं प्रमाणन बहुत तेजी से हो रहा है. इस क्षेत्र को बेहतर समझने, इससे संबंधित डाटा व सूचनाओं का प्रयोग करने तथा इसके उचित नीतियों के निर्माण के लिये सरकार को एक स्वतंत्र निकाय का गठन करना चाहिये , जो इस क्षेत्र के लिए एक परामर्शदाता की भूमिका निभाएगा ि विकासोन्मुख ढांचा प्रदान करने के लिए ऐसे श्रम कानून बनाए जाने चाहिए जो इस क्षेत्र के लिए अनुकूल हो तथा श्रमिकों के अधिकारों की सुरक्षा करने में भी सक्षम हो . इसके अतिरिक्त , इस क्षेत्र के विकास हेतु कर व्यवस्था में सुधार, ई कॉमर्स को बढ़ावा , बाजार तक आसान पहुँच और व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा कौशल विकास जैसे उपायों को अपनाया जाना चाहिए .

एम . एस . एम . ई भारतीय अर्थव्यवस्था की एक अहम कड़ी है. आर्थिक व्यवस्था को गति देने की लिए इस क्षेत्र के विकास का काफी महत्व है . वर्तमान समय में भारतीय अर्थव्यवस्था के नई ऊँचाईयों को छूने के लिए इस क्षेत्र का सर्वांगीण विकास अत्यंत आवश्यक है.

भारतीय संस्कृति

राजीव कुमार
मुख्य प्रबंधक
उत्तर मुंबई क्षेत्रीय कार्यालय

भारत समृद्ध संस्कृति और विरासत का देश है जहाँ लोगों में मानवता, सहिष्णुता, एकता, धर्मनिरपेक्षता, मजबूत सामाजिक बंधन है. पूरे विश्व में भारत देश अपनी संस्कृति के लिए जाना जाता है. भारतीय लोग आज भी अपनी परंपरा को बनाये रखे हैं. इसलिए भारत को संस्कृतियों का समृद्ध देश कहा जाता है. भारतीय अपने सौम्य व्यवहार के लिए प्रसिद्ध है. भारत में अलग अलग संस्कृतियों के लोग रहते हैं. जिसमें उनका धर्म, उनका खानपान, उनकी वेशभूषा उनके त्यौहार आदि शामिल है . भारत की संस्कृति दुनिया की सबसे पुरानी संस्कृति मानी जाती है. इसका बड़ा प्रमाण काशी माना जाता है. काशी का इतिहास 8000-9000 वर्ष पुराना बताया जाता है. इसी भारतीय संस्कृति में भारत देश में कई महापुरुषों का जन्म हुआ है तथा कई वीर पुरुषों का भी जन्म हुआ है. भारत में बने स्मारक भी भारतीय संस्कृति की परंपरा के बारे में बताते हैं. जब राजाओं का शासन था तभी राजाओं और सम्राटों ने अविश्वसनीय संरचनाओं तथा स्मारकों का निर्माण किया था. जो अपने आप में अद्वितीय है. भारतीय संस्कृति नैतिक मूल्यों और नैतिकता के उच्च मानकों से भरी हुई है.

आज कल पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव भारत के लोगों में देखा जा सकता है. युवा हो या वयस्क सभी विदेशी प्रभाव में आ चुके हैं . इसका ज्यादा प्रभाव युवाओं में हुआ है जो अपनी आजादी चाहते हैं. उन्हें कोई बंदिशे नहीं चाहिए.बिना किसी रोक-टोक के आजादी से जीना चाहते हैं. इसका उदाहरण तो हम देख ही रहे हैं. पहले जहाँ संयुक्त परिवार होता था वहाँ अब एकल परिवार हो गये है. हमें हमारी संस्कृति की धरोहर को संजो कर रखना है.

भारतीय संस्कृति का महत्व :

भारतीय संस्कृति को विश्व में प्राचीन संस्कृतियों में जाना जाता हैं. हमारी संस्कृति में बड़ों का आदर करना सिखाया जाता है. बड़ों के चरण स्पर्श करके आशीर्वाद लेना सिखाया जाता है. भारतीय संस्कृति में ज्ञान और वेद का महत्व है. वेद हमारी संस्कृति के महत्वपूर्ण अंग है. हमारे भारत देश के ऋषि मुनियों ने ही वेद बनाये हैं . हमारी भारतीय संस्कृति में क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद चार वेद है.

ऋग्वेद : यह वेद सभी वेदों में सबसे पुराना है. सनातन धर्म का सबसे आरम्भिक स्त्रोत है. इसमें मंत्रों की संख्या लगभग 10552 है. इसमें देवताओं की स्तुति हेतु मंत्र है.

यजुर्वेद : यजु का मतलब पूजा है. इसलिए इसे पूजा का ज्ञान कहा जाता है. इसमें 1975 मंत्र है. इस वेद में यज्ञ तथा अनुष्ठानों के बारे में ज्ञान दिया गया है.

सामवेद : इसमें 1875 मंत्र है. इसे गीतों का ज्ञान कहा जाता है तथा उपासना का प्रवर्तक भी कहा जाता है.

अथर्ववेद : इसे ऋग्वेद के बाद की वेदांत अवस्था माना गया है. इसमें 5977 मंत्र है. इसमें विवाह और अंत्येष्टि के भी मंत्र है.

भारतीय संस्कृति अपने परम्पराओं से जीवन की शैली से, आध्यात्मिक तौर से जुडी है. यह हमें जीवन का अर्थ तथा जीवन जीने का तरीका सिखाती है.

भारतीय संस्कृति में भाषा तथा धर्म

भारत में धार्मिक विविधता है. भारत के इतिहास में धर्म तथा संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थान है. भारत में विविध भाषाएं बोली जाती है जैसे -उत्तर प्रदेश , हरियाणा, बिहार,राजस्थान,मध्य प्रदेश , हिमाचल प्रदेश तथा दिल्ली यह सब हिन्दी भाषी क्षेत्र है. महाराष्ट्र में मराठी, ओडिसा ,बांग्ला व असमी पूर्वी भारत में बोली जाती है. कर्नाटक में कन्नड, तमिलनाडू में तमिल तथा आंध्रा में तेलगू , गुजरात में गुजराती . इस तरह हमारी भारतीय संस्कृति में भाषा की विविधता है . भारत के संविधान में राष्ट्र को एक धर्मनिरपेक्ष गणतंत्र घोषित किया गया है. जिसमें प्रत्येक नागरिक को किसी भी धर्म या आस्था का स्वतंत्र रुप से पालन करने का अधिकार है. भारत में अलग-अलग धर्म समुदाय के लोग रहते हैं.

भारत में हर प्रांत में अपनी वेशभूषा है. भारत में जलवायु और लोगों की संस्कृति और परंपरा के कारण वेशभूषा में बहुत विविधता है. यहाँ हर राज्य में अलग पहराव होता है और उसी से राज्य पहचाना जाता है. आज कल शहर में यह देखने नही मिलता है. गाँवो में अभी भी लोगों ने अपनी संस्कृति बचाये रखा है. शहर में पुरुष पैंट और शर्ट पहनते है और नारी साड़ी या सलवार सूट पहनती है. लेकिन हमारी पुरानी संस्कृति के अनुसार हर राज्य में पुरुष और स्त्री का पहनावा अलग होता है.

भातीय खान-पान

भारत में विविध संस्कृति के तहत हमें खान-पान में भी विविधता मिलती है. जैसे उत्तर भारतीय खाना, दक्षिण भारतीय खाना, पश्चिम भारतीय खाना पूर्व भारतीय खाना. भारत के सभी क्षेत्र, राज्य में अनेक भोजन के विविध नाम है. जैसे भारतीय संस्कृति में विविधता है वैसे ही भारतीय खाने में भी विविधता है. हर राज्य में खाने की विविधता पाई जाती है. भारत को मसालों का देश भी कहा जाता है. भारतीय खानों में विविध मसालों का उपयोग किया जाता है. भारतीय भोजन विविध प्रकार की पाक कलाओं का संगम है. इसमें शाकाहारी तथा मांसाहारी खाना भी शामिल है. भारतीय खानपान यह संग्रह देश की सांस्कृतिक विविधता को दर्शाता है.

भारतीय वेशभूषा

भारतीय त्यौहार

भारत में विविध धर्म के विविध त्यौहार मनाये जाते हैं इसलिए भारत को त्यौहारों का देश भी कहा गया है. अगर देखा जाए तो भारत में हर दिन कोई न कोई त्यौहार होता है. देखा जाए तो त्यौहार में मुख्य चार त्यौहार आते हैं. होली, रक्षाबंधन, दशहरा तथा दीपावली. ईद, क्रिसमस यह भी मुख्य त्यौहार है. भारत में त्यौहारों का बहुत महत्व है. यहाँ सभी धर्मो के अलग-अलग त्यौहार मनाये जाते हैं.

भारत विभिन्न धर्मों के साथ अनेकता में एकता का देश है. त्यौहार चाहे किसी धर्म का हो , सभी धर्म और जाती के लोग इन्हें मिल - जुलकर मनाते है. सभी लोग अपने भेदभाव भुलाकर इन त्यौहारों का एक साथ आनंद लेते है.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारतीय संस्कृति

विशेष आकर्षण - एम एस एम ई

श्री पुरुषोत्तम मीना,
उप आंचलिक प्रबन्धक,
आंचलिक कार्यालय,
चंडीगढ़

भारतीय संस्कृति का महत्व:-

किसी भी देश के विकास में कला का महत्वपूर्ण योगदान होता है. सभी आर्थिक, सामाजिक एवं अन्य गतिविधियों में संस्कृति एवं रचनात्मकता का समावेश होता है. विविधताओं का देश, भारत अपनी विभिन्न संस्कृतियों के लिए जाना जाता है. भारत में गीत-संगीत, नृत्य, नाटक-कला, लोक परंपराओं, कला-प्रदर्शन, धार्मिक-संस्कारों एवं अनुष्ठानों, चित्रकारी एवं लेखन के क्षेत्रों में एक बहुत बड़ा संग्रह मौजूद है जो मानवता की 'अमूर्त सांस्कृतिक विरासत' के रूप में जाना जाता है. इनके संरक्षण हेतु संस्कृति मंत्रालय ने विभिन्न कार्यक्रमों एवं योजनाओं को कार्यान्वित किया है जिसका उद्देश्य कला-प्रदर्शन, दर्शन एवं साहित्य के क्षेत्र में सक्रिय व्यक्तियों, समूहों एवं सांस्कृतिक संस्थानों को वित्तीय सहायता प्रदान करना है. संस्कृति एक समाज की ताकत होती है. वह एक समाज को जोड़कर रखने का कार्य करती है. संस्कार एक व्यक्ति को जीवन जीने का सही तरीका सिखाती है. यें संस्कार हमारी पूंजी होते है, जो मनुष्य को सभ्य बनाते है. यें सामाजिक एकता को बढ़ावा देते है. हमारे देश की संस्कृति हमारें इतिहास को दर्शाती है. संस्कृति इस समाज का रचनात्मक विकास करती है. यह हमें हमारा अस्तित्व प्रदान करती है. हमारी संस्कृति दूसरों को दिखाती है कि हम कौन है. यह हमारे जीवन की गुणवत्ता बढ़ाती है, इसलिए किसी भी देश में संस्कारों का होना अत्यंत आवश्यक है. संस्कृति एक समाज को जीवन प्रदान करती है. इससे समाज व व्यक्ति दोनों का कल्याण होता है.

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम की शुरुआत:

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम की शुरुआत भारत में उद्यमिता विकास के प्रमुख चरण के रूप में देखी जा सकती है. इसकी आधिकारिक शुरुआत वर्ष 2006 में हुई थी, जब भारत सरकार ने सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों के विकास के लिए ठमाइक्रो, स्मॉल और मीडियम एंटरप्राइज डेवलपमेंट एग्रीमेंटठ (श्एर्ईं) को प्रभावी किया. श्एर्ईं के तहत विभिन्न योजनाओं, समर्थन उपकरणों, ऋणों और आर्थिक सहायता के माध्यम से सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों को स्थापित करने और उनका विकास करने का प्रयास किया जाता है. यह उद्यमों को आवश्यक वित्तीय संसाधन, तकनीकी सहायता, विपणन समर्थन और प्रशिक्षण की आवश्यकताओं के साथ संबंधित बाधाओं का सामना करने में मदद करता है. इससे पहले भी भारत में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों की विकास की कई पहल की गई थी, लेकिन श्एर्ईं के शुरुआती वर्ष 2006 को होने के साथ ही इसे आधिकारिक रूप से मजबूती मिली और सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों के लिए समर्थन और सुविधाएं विस्तारित की गईं.

पृष्ठभूमि:

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग (एम.एस.एम.ई.) क्षेत्र को विश्व भर में विकास के इंजन के रूप में जाना जाता है. दुनिया के कई देशों ने इस क्षेत्र के विकास के सम्बंध और सभी सरकारी कार्यों में समन्वय की देखरेख के लिये एक नोडल एजेंसी के रूप में एम.एस.एम.ई. विकास एजेंसी की स्थापना की है. भारत के मामले में भी मध्यम उद्योग स्थापना को एक अलग नियम के अंतर्गत परिभाषित किया गया है जो कि सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) विकास अधिनियम, 2006 (02 अक्टूबर, 2016 से लागू) है.

1. सूक्ष्म उद्योग की परिभाषा :-जिन उद्योगों में निवेश एक करोड़ से कम एवं टर्नओवर 5 करोड़ से कम है उन्हें सूक्ष्म उद्योग कहा जायेगा.

2. लघु उद्योग की परिभाषा :- जिन उद्योगों में निवेश 10 करोड़ से कम एवं टर्नओवर 50 करोड़ से कम है उन्हें सूक्ष्म उद्योग कहा जायेगा.

3. मध्यम उद्योग की परिभाषा :-जिन उद्योगों में निवेश 20 करोड़ से कम एवं टर्नओवर 100 करोड़ से कम है उन्हें मध्यम उद्योग कहा जायेगा.

एम.एस.एम.ई द्वारा जी.डी.पी. में 20ऱ का योगदान देने और लगभग 110 मिलियन श्रमिकों को रोज़गार देने के बावजूद, इसे अधिक उत्पादक और प्रतिस्पर्धी बनाने के लिये एक दूरगामी व्यावसायिक नीति बनाने में सरकार विफल रही है. एक बड़ी समस्या यह है कि एम.एस.एम.ई.क्षेत्र का आकार बड़ा नहीं हो रहा है और उनकी गतिशीलता में भी कमी आ रही है. अनुमानित कुल 6 करोड़ उद्यमों में से 99ऱ सीमित आकांक्षा वाले सूक्ष्म उद्यम ही हैं. संरचनात्मक प्रतिस्पर्धा की कमी इनसे जुड़ा मूल मुद्दा है. दुनिया भर में, एमएसएमई को आर्थिक विकास के इंजन और समान विकास को बढ़ावा देने के लिए स्वीकार किया गया है. वे अधिकांश अर्थव्यवस्थाओं में कुल उद्यमों का 90ऱ से अधिक हिस्सा बनाते हैं और उन्हें रोजगार वृद्धि की उच्चतम दर पैदा करने का श्रेय दिया जाता है. कम निवेश आवश्यकताओं, परिचालन लचीलेपन और उचित स्वदेशी प्रौद्योगिकी विकसित करने की क्षमता के साथ, एसएमई के पास भारत को नई ऊंचाइयों पर ले जाने की शक्ति है. इसलिए, ऐसा लगता है कि भारत में एमएसएमई द्वारा संचालित एक मूक क्रांति हो रही है.

एमएसएमई क्या है?

एमएसएमई का मतलब है, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम यानी छोटे और मध्यम स्तर के व्यवसाय. एमएसएमई का प्रबंधन सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय (एमएसएमई) द्वारा किया जाता है. एमएसएमई सेक्टर का भारत के सामाजिक-आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान है, यही वजह है कि इसे भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी भी कहा जाता है. यह सेक्टर न सिर्फ रोज़गार के अवसर पैदा करता है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों के विकास में भी इसकी अहम भूमिका है. 31 अगस्त 2021 तक के आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक, भारत में करीब 6.3 करोड़ एमएसएमई हैं. एमएसएमई के बारे में और भी जानकारी हासिल करने के लिए आइए जानते हैं, इसकी बुनियादी बातों, वर्गीकरण, विशेषताओं, भूमिका और सामाजिक-आर्थिक विकास में इसके महत्व के बारे में.

भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एमएसएमई का महत्व -

- रोज़गार: यह कृषि के बाद दूसरा सबसे बड़ा रोज़गार पैदा करने वाला क्षेत्र है. यह भारत में लगभग 120 मिलियन व्यक्तियों को रोजगार प्रदान करता है.

- सकल घरेलू उत्पाद में योगदान: देश के भौगोलिक विस्तार में लगभग 36.1 मिलियन इकाइयों के साथ, एमएसएमई विनिर्माण सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 6.11ऱ और सेवा गतिविधियों से सकल घरेलू उत्पाद में 24.63ऱ का योगदान देता है. एमएसएमई मंत्रालय ने 2025 तक सकल घरेलू उत्पाद में अपना योगदान 50ऱ तक बढ़ाने का लक्ष्य रखा है क्योंकि भारत 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बन जाएगा.

- निर्यात : यह भारत से कुल निर्यात में लगभग 45ऱ का योगदान देता है.

समावेशी विकास: एमएसएमई ग्रामीण क्षेत्रों में विशेषकर समाज के कमजोर वर्गों के लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान करके समावेशी विकास को बढ़ावा देते हैं. उदाहरण के लिए: खादी और ग्रामोद्योग को प्रति व्यक्ति कम निवेश की आवश्यकता होती है और ग्रामीण क्षेत्रों में बड़ी संख्या में महिलाओं को रोजगार मिलता है.

- वित्तीय समावेशन: टियर-II और टियर-III शहरों में छोटे उद्योग और खुदरा व्यवसाय लोगों के लिए बैंकिंग सेवाओं और उत्पादों का उपयोग करने के अवसर पैदा करते हैं.

- नवाचार को बढ़ावा देना: यह नवोदित उद्यमियों को रचनात्मक उत्पाद बनाने का अवसर प्रदान करता है जिससे व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा बढ़ती है और विकास को बढ़ावा मिलता है.

इस प्रकार, भारतीय एमएसएमई क्षेत्र राष्ट्रीय आर्थिक संरचना की रीढ़ है और भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एक ढाल के रूप में कार्य करता है, जो वैश्विक आर्थिक झटकों और प्रतिकूलताओं को दूर करने के लिए लचीलापन प्रदान करता है.

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम विकास (संशोधन) विधेयक, 2018 में सभी एमएसएमई को उनके वार्षिक कारोबार के आधार पर पुनर्वर्गीकृत करने का प्रस्ताव है, चाहे वे विनिर्माण या सेवा प्रदान करने वाले उद्यम हों. बिल को लोकसभा में पेश किया गया और आगे स्थायी समिति को भेजा गया जिसने 28 दिसंबर 2018 को अपनी रिपोर्ट पेश की.

उद्यमों का सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों के रूप में वर्गीकरण - (रु में)

उद्यम का प्रकार	अधिनियम 2006		बिल 2018
	उत्पादन	सेवाएँ	सभी उद्यमों के लिए
	प्लांट एवं मशीनरी में निवेश	उपकरण में निवेश	वार्षिक टर्नओवर
सूक्ष्म	25 लाख	10 लाख	5 करोड़
लघू	25 लाख से 5 करोड़	10 लाख से 2 करोड़	5 से 75 करोड़

मध्यम	5 से 10 करोड़	2 से 5 करोड़	75 से 260 करोड़

वे कारक जिनके कारण एमएसएमई का विकास हुआ -

1. स्किल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, डिजिटल इंडिया और मेक इन इंडिया जैसे अभियानों का उद्देश्य एमएसएमई खिलाड़ियों को समान अवसर प्रदान करना और बढ़ी हुई उत्पादकता की दिशा में एक निश्चित धक्का देना है.

2. डिजिटलीकरण: बढ़ती इंटरनेट पहुंच, बी2सी ईकॉमर्स खिलाड़ियों द्वारा संचालित डिजिटल भुगतान से ग्राहकों का परिचित होना एमएसएमई क्षेत्र के विकास को सुविधाजनक बनाता है.

3. नए जमाने की गैर-बैंकिंग वित्त (फिनटेक) कंपनियों के साथ गठजोड़ ने एमएसएमई को समय पर संपार्श्विक मुक्त वित्त तक पहुंच की अनुमति दी.

4. रोजगार के पैटर्न में बदलाव: युवा पीढ़ी कृषि से उद्यमशीलता गतिविधियों की ओर बढ़ रही है, जिससे दूसरों के लिए रोजगार की संभावनाएं पैदा हो रही हैं.

कोविड-19 महामारी के कारण सूक्ष्म,लघु एवं मध्यम उद्योग बुरी तरह से प्रभावित हुए हैं. लॉकडाउन के कारण सभी प्रकार की आर्थिक गतिविधियाँ ठप्प रहीं, जिससे अनेक लघु उद्योग गंभीर आर्थिक संकट से जूझ रहे हैं तथा वित्तपोषण संबंधी आवश्कताओं को पूरा करने के लिये सरकारी नीतियों व उपायों की प्रतीक्षा कर रहे हैं.

सूक्ष्म,लघु एवं मध्यम उद्योगों का महत्त्व -

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. लगभग 6.3 करोड़ एम.एस.एम.ई. देश की जी.डी.पी. में एक-तिहाई का योगदान देते हैं और आबादी के एक बड़े हिस्से को विशेषकर असंगठित क्षेत्र में रोज़गार प्रदान करते हैं. भारत में विनिर्माण क्षेत्र की तुलना में सेवा क्षेत्र को अधिक महत्त्व दिया जाता है, ऐसे में एम.एस.एम.ई. ने घरेलू उत्पादों को आयातित उत्पादों के समक्ष प्रतिस्पर्धी बनाया है. एम.एस.एम.ई. आत्मनिर्भरता की स्थिति को प्राप्त करने के साथ-साथ भारत की आर्थिक रणनीति में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं. ये उद्योग ग्रामीण क्षेत्रों के औद्योगीकरण में भी उल्लेखनीय योगदान देते हैं. लघु एवं मध्यम उद्यम पूरक इकाइयों की तुलना में बड़े उद्योग होते हैं,जो देश के सामाजिक और आर्थिक विकास में भी योगदान देते हैं. घरेलू उत्पादन में वृद्धि, न्यून निवेश आवश्यकताएँ, परिचालनात्मक लचीलापन, स्थानिक गतिशीलता, उचित घरेलू तकनीक विकसित करने की क्षमता और प्रशिक्षण प्रदान करके निर्यात बाज़ार द्वारा नए उद्यमियों के प्रवेश के माध्यम सेएम.एस.एम.ई. क्षेत्र/राष्ट्र के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं.

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों के समक्ष चुनौतियाँ -

बैंकिंग क्षेत्र तक व्यापक पहुँच न होने के कारण अधिकाँश एम.एस.एम.ई. वित्तीय आवश्यकताओं के लिये एन.बी.एफ़.सी. और सूक्ष्म वित्त संस्थानों पर निर्भर होते हैं. ऐसे में जब एन.बी.एफ़.सी. या सूक्ष्म वित्त संस्थानों में पूंजी या तरलता की कमी होती है तब इन उद्योगों को भी कठिनाई का सामना करना पड़ता है. इस क्षेत्र के लिये ऋण माँग तथा ऋण आपूर्ति में एक बड़ा अंतर है. इस क्षेत्र को औपचारिक रूप से 16 ट्रिलियन रुपए का ऋण प्राप्त होता है, जबकि इसकी समग्र मांग 36 ट्रिलियन है. इस प्रकार, ऋण माँग तथा ऋण आपूर्ति में 20 ट्रिलियन का अंतर है. वर्तमान समय में लगभग 6.3 करोड़ एम.एस.एम.ई. में से केवल 1.1 करोड़ ही जी.एस.टी. व्यवस्था के अंतर्गत पंजीकृत हैं. इनमें भी आयकर दाखिल करने वालों की संख्या तो और भी कम है, जिस कारण इस क्षेत्र को डाटा के आभाव में पर्याप्त ऋण और अन्य लाभ प्राप्त नहीं हो पाते. एक अनुमान के मुताबिक एम.एस.एम.ई. क्षेत्र जर्मनी तथा चीन की जी.डी.पी. में क्रमश: 55ञ और 60ञ का योगदान देता है, जबकि भारत में इस स्तर को प्राप्त करने के लिये अभी एक लंबा रास्ता तय करना होगा. इसके अतिरिक्त, आधारभूत ढाँचे की कमी, बाज़ार तक पहुँच का न होना, आधुनिक तकनीक का आभाव, कौशल विकास एवं प्रशिक्षण का आभाव तथा जटिल श्रम कानून भी एम.एस.एम.ई. क्षेत्र के लिये चुनौती उत्पन्न करते हैं.

सरकारी प्रयास -

महामारी के समय में एम.एस.एम.ई. क्षेत्र को बढ़ावा देने केउद्देश्य से आत्मनिर्भर भारत अभियान के अंतर्गत इस क्षेत्र के लिये निम्नलिखित घोषणाएँ की गईं-

- सूक्ष्म,लघु एवं मध्यम उद्योगों के लिये 3 लाख करोड़ रुपए की आपातकालीन कार्यशील पूंजी सुविधा
- ऋणग्रस्त सूक्ष्म,लघु एवं मध्यम उद्योगों के लिये 20,000 करोड़ रुपए का ग़ैर-प्राथमिकता क्षेत्र ऋण
- एम.एस.एम.ई. फंड ऑफ़ फंड्स के माध्यम से 50,000 करोड़ रुपए की इक्विटी का प्रावधान.

एम.एस.एम.ई. क्षेत्र के विकास के लिये जनवरी 2019 में एम.एस.एम.ई. मंत्रालय ने एक स्थाई पारिस्थिति की तंत्र बनाने के उद्देश्य से निर्यात संवर्द्धन परिषद् का गठन किया. इस क्षेत्र की उत्पादकता बढ़ाने के उद्देश्य से वर्ष 2018 में ब्याज अनुदान योजना शुरू की गई. भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक इस योजना के लिये नोडल एजेंसी है. एम.एस.एम.ई. इकाईयों का विस्तृत डाटा-आधार निर्मित करने तथा सार्वजनिक खरीद नीति के तहत खरीद

प्रक्रिया में भाग लेने के उद्देश्य से एम.एस.एम.ई. डाटा बैंक का गठन किया गया. एम.एस.एम.ई. क्षेत्र की विपणन क्षमता को घरेलू एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ाने के लिये विपणन संवर्द्धन योजना शुरू की गई. इसके अतिरिक्त, स्फूर्ति योजना, एस्पायर योजना, साख गारंटी कोष, ज़ीरो डिफेक्ट ज़ीरो इफ़ेक्ट, स्टैंड-अप तथा मुद्रा जैसी योजनाएँ भी एम.एस.एम.ई. क्षेत्र के विकास से संबंधित हैं.

सुधार हेतु सुझाव -

एम.एस.एम.ई. क्षेत्र का वृहद स्तर पर औपचारीकरण होना चाहिये. हालाँकि, इन उद्योगों का पंजीकरण, प्रमाणन तथा प्रलेखन तेज़ी से हो रहा है. जहाँ वर्ष 2015 में केवल 22 लाख पंजीकृत एम.एस.एम.ई. थे, वहीं अब यह संख्या 88 लाख हो गई है. भारत में बॉण्ड बाज़ार धीरे-धीरे विकसित हो रहा है. अत: एम.एस.एम.ई. बॉण्ड जारी करने का प्रयास करना चाहिये. इससे ऋण पूंजी बाज़ारों की भागीदारी को बढ़ावा मिल सकता है. एम.एस.एम.ई. क्षेत्र को बेहतर समझने, इससे संबंधित डाटा व सूचनाओं का प्रयोग करने तथा इसके लिये उचित नीतियों के निर्माण के लिये सरकार को एक स्वतंत्र निकाय का गठन करना चाहिये, जो इस क्षेत्र के लिये एक परामर्शदाता की भूमिका निभाएगा.

वर्तमान के श्रम कानून एम.एस.एम.ई. क्षेत्र के लिये अनुकूल नहीं हैं. अत: विकासोन्मुख ढाँचा प्रदान करने के लिये ऐसे श्रम कानून बनाए जाने चाहियें जो इस क्षेत्र के लिये अनुकूल हों तथा श्रमिकों के अधिकारों की सुरक्षा करने में भी सक्षम हों. इसके अतिरिक्त, इस क्षेत्र के विकास हेतु कर-व्यवस्था में सुधार, ई-कॉमर्स को बढ़ावा, बाज़ार तक आसान पहुँच और व्यावसायिक प्रशिक्षण एवं कौशल विकास जैसे उपायों को अपनाना चाहिये.

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों का भारतीय अर्थव्यवस्था में योगदान:

वर्तमान में एमएसएमई के द्वारा भारत में लगभग 12 करोड़ लोगों को रोज़गार प्राप्त हुआ है. एमएसएमई, भारत के कुल निर्यात में करीब 45₹ योगदान देते हैं. एमएसएमई, भारत के विनिर्माण-सकल घरेलू उत्पाद में 6.11₹ का योगदान देते हैं. सेवा क्षेत्र से मिलने वाली में 25₹ का योगदान देते हैं. इस क्षेत्र ने लगातार 10₹ से अधिक की वार्षिक वृद्धि दर को बनाए रखा है. देश के सकल घरेलू उत्पाद में इस क्षेत्र का योगदान लगभग 8₹ का है. एमएसएमई की बहुत सी इकाइयाँ ग्रामीण क्षेत्रों में भी स्थित हैं जिसके कारण गाँवों से शहरों की ओर पलायन रुका है.

एमएसएमई के लिये आर्थिक पैकेज 2020 में घोषित मुख्य बातें:

जो एमएसएमई सक्षम हैं, लेकिन कोरोना की वजह से दिक्कत में हैं, उन्हें कारोबार विस्तार के लिये 10,000 करोड़ रुपये के फंड ऑफ फंड्स के माध्यम से सहयोग दिया जाएगा. यह विभिन्न एमएसएमई को इक्विटी फण्ड के तहत फंडिंग उपलब्ध कराएगा. तीन लाख करोड़ रुपए तक के कोलेटरल फ्री ऑटोमेटिक लोन एमएसएमई को बिना गारंटी के दिये जाएंगे. इस स्कीम का लाभ 31 अक्तूबर 2020 तक लिया जा सकता है. इस लोन को चुकाने की समय सीमा चार साल की होगी और मूलधन चुकाने के लिये 12 महीनों का अतिरिक्त समय दिया जायेगा. पहले एक साल में मूलधन चुकाने की ज़रुरत नहीं होगी. जो एमएसएमई अच्छा कारोबार कर रहे हैंऔर विस्तार करना चाहते हैंलेकिन विस्तार करने के लिये फण्ड नहीं हैं उनके लिये भी फंड ऑफ़ फंड्स बनाया जा रहा है. इससे पचास हज़ार करोड़ की इक्विटी आएगी. इस आर्थिक पैकेज से 45 लाख एमएसएमई को फायदा मिलेगा.

एमएसएमई की मुख्य चुनौतियाँ:

आँकड़ों का अभाव - भारत में एमएसएमई सामान्यत: अत्यंत लघु स्तर पर कार्य करते हैं व अधिकांश पंजीकृत नहीं हैं. इनमें से अधिकतर के किसी प्रकार के खाते नहीं हैं एवं वस्तु और सेवा कर देने या अन्य नियमों का पालन सक्रिय रूप से नहीं करते. इससे वे कुछ कर तो बचा लेते हैं किन्तु पंजीकरण न होने के कारण आवश्यकता के समय सरकार उन तक नहीं पहुँच पाती जिससे वे सब्सिडी आदि से वंचित रह जाते हैं. कोविड-19 के समय यह विशेष रूप से देखा गया.

आर्थिक चुनौतियाँ - वर्ष 2018 में अंतर्राष्ट्रीय वित्त निगम द्वारा जारी एक रिपोर्ट के अनुसार, एमएसएमई क्षेत्र को उनकी कुल आवश्यकता का एक-तिहाई (लगभग 11 लाख करोड़ रुपए) से कम ऋण ही उपलब्ध हो पाता है. एमएसएमई अपना अधिकांश ऋण अनौपचारिक स्रोतों से प्राप्त करते हैं इसी वजह से रिज़र्व बैंक इनमें तरलता बढाने को लेकर ज़्यादा उपाय नहीं कर पाता.

निष्कर्ष -

एम.एस.एम.ई. क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है. आर्थिक विकास को गति देने तथा 'आत्मनिर्भर भारत' के सपने को साकार करने के लिये इन उद्योगों के विकास को प्राथमिकता देना आवश्यक है. हालाँकि, सरकार इनके विकास की दिशा में लगातार प्रयास कर रही है, लेकिन ये प्रयास वर्तमान में पर्याप्त नहीं हैं. अत: वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए प्रभावी उपायों को अपनाना तथा एक सक्षम तंत्र का निर्माण करना आवश्यक है. सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) क्षेत्र पिछले पाँच दशको में भारतीय अर्थव्यवस्था में एक अत्यधिक जीवंत एवं गतिशील क्षेत्र के रूप में उभरा है. इस क्षेत्र ने भारत की अर्थव्यवस्था को आर्थिक मंदी के समय मंदी में फँसने से बचाया था. कुल मिलाकर यह क्षेत्र देश की अर्थव्यवस्था के लिये रीढ़ की हड्डी जैसा किरदार निभा रहा है. वर्तमान समय में यह क्षेत्र कुछ विशेष दिक्कतों व चुनौतियों का सामना कर रहा है.

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा शिमला, रायपुर एवं रॉची क्षेत्रीय कार्यालयों का सफल राजभाषायी निरीक्षण किया गया. निरीक्षण की कुछ झलकियां.

निरीक्षण के दौरान क्षेत्रीय कार्यालय रायपुर द्वारा प्रशासनिक कार्यालय में राजभाषा नीति के समग्र अनुपालन के दौरान ध्यान देने योग्य बातों पर तैयार एक बुकलेट का विमोचन करते हुये माननीय सांसदगण.

निरीक्षण के पश्चात प्रमाण पत्र प्रदान करते हुये माननीय सांसदगण.

निरीक्षण के दौरान क्षेत्रीय कार्यालय शिमला द्वारा तैयार हिंदी पोस्टर का विमोचन करते हुये माननीय सांसदगण.

निरीक्षण के पश्चात प्रमाण पत्र प्रदान करते हुये माननीय सांसदगण.

राजभाषा गतिविधियां

छत्तीसगढ़ राज्य के राज्यपाल माननीय श्री विश्वभूषन हरिचंदन जी का सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया की ओर से सम्मान करते हुए हमारे बैंक के राजभाषा प्रमुख, सहायक महाप्रबंधक श्री राजीव वार्ष्णेय.

महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार के अकोला दौरे के दौरान, क्षेत्रीय कार्यालय अकोला में राजभाषा प्रदर्शनी का आयोजन.

बैंक नराकास हैदराबाद की छमाही बैठक दिनांक 29 मई 2023 में राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु आंचलिक कार्यालय हैदराबाद को तृतीय पुरस्कार उप अंचल प्रमुख श्री सतीश तलरेजा ने ग्रहण किया. साथ में भक्ति सरकार वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा तथा जीतन ठाकुर, राजभाषा अधिकारी भी उपस्थित थे.

बैंक-बीमा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर द्वारा वर्ष 2022-23 के लिए सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ.

मडगांव नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा दिनांक 30.05.2023 को आयोजित छमाही बैठक में सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया, मडगांव शाखा को राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए समिति के अध्यक्ष श्री नरेश कटारिया द्वारा "प्रथम पुरस्कार प्रदान" किया गया.

श्री व्ही व्ही नटराजन, महाप्रबंधक, सूक्ष्म, लघु, एवं मध्यम उद्यम, केन्द्रीय कार्यालय, के वाराणसी आगमन पर राजभाषा कक्ष, द्वारा आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन एवं पोस्टर का विमोचन किया गया.

राजभाषा गतिविधियां

बैंक नराकास कोलकाता की छमाही बैठक दिनांक 26 मई 2023 यूको बैंक के कार्यपालक निदेशक व भारत सरकार राजभाषा विभाग क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय के उपनिदेशक श्री निर्मल कुमार दुबे द्वारा श्री राजीव साव राजभाषा अधिकारी को पुरस्कृत किया गया.

लखनऊ अंचल के 69 नवागत लिपिक सदस्यों की हिंदी कार्यशाला दिनांक- 03.05.2023 को सफलता से आयोजित किया गया.

दिनांक 10 मई, 2023 को सीएलडी, कोलकाता में बैंक में नए भर्ती हुए लिपिक वर्ग के स्टाफ सदस्यों को राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी प्रशिक्षण प्रदान किया गया.

हैदराबाद अंचलाधीन एवं गुंटूर क्षेत्राधीन शाखा करनूल को राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु नराकास करनूल की ओर से तृतीय पुरस्कार उपनिदेशक (कार्यान्वयन) श्री अनिर्बान कुमार विश्वास तथा नराकास अध्यक्ष ने प्रदान किया. साथ ही शाखा के स्टाफ श्री अजय कुमार सिगरी को नराकास के सौजन्य में आयोजित हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में *ग* वर्ग में तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India

सागर में मिलती धाराएं,
हिंदी सबकी संगम है,
शब्द, नाद, लिपि से भी आगे,
एक भरोसा अनुपम है,
गंगा, कावेरी के धारा,
साथ मिलाती हिन्दी है,
पूर्व-पश्चिम, कमल-पंखुरी,
सेतु बनती हिंदी है।

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India

राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निर्देश

संविधान के अनुच्छेद 343(1) में यह उपबंधित है कि संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी। अनुच्छेद 342 में यह भी उपबंधित है कि संघ में शासकीय कार्यों के लिए अंग्रजी भाषा का प्रयोग संविधान के प्रारम्भ से 15 वर्ष की अवधि (अर्थात् 25 जनवरी, 1965) तक किया जाता रहेगा। अनुच्छेद 343(1) में संसद को यह उपबंधित करने की शक्ति दी है कि वह विधि द्वारा शासकीय प्रयोजन के लिए 25 जनवरी, 1965 के बाद भी शासकीय कार्य में अंग्रेजी का प्रयोग जारी रखवा सकेगी। तदनुसार, राजभाषा अधिनियम, 1963 (1967 में संसोधित) की धारा 3(2) में 25 जनवरी,1965 के बाद भी शासकीय कार्य में अंग्रेजी का प्रयोग जारी रखने की व्यवस्था की गई है। इस अधिनियम में यह भी निर्धारित किया गया है कि हिंदी और अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं का प्रयोग कतिपय विनिर्दिष्ट प्रयोजनों के लिए अनिवार्यतः किया जाएगा । जैसे-संकल्प सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचना, प्रशासनिक वअन्य प्रतिवेदन, प्रेस विज्ञप्तियां, संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे जाने वाले प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदन और शासकीय कागज पत्र, संविदा, करार, अनुज्ञप्ति, अनुज्ञा पत्र, निविदा सूचना और निविदा प्रपत्र आदि

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "सेन्ट्रल" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

Azadi Ka Amrit Mahotsav

G20

Time बचाओ आगे बढ़ते जाओ

FASTag
Easy to Cruise

Apply for FASTag today

- Auto top-up facility
- Earn interest on hold amount No separate wallet required
- Charges debit on T+1 day

www.centralbankofindia.co.in

राजभाषा हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2023-24 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र. सं.	कार्य विवरण	''क'' क्षेत्र	''ख'' क्षेत्र	''ग'' क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. 'क' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 100% 2. 'क' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 100% 3. 'क' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 65% 4. 'क' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 100%	1. 'ख' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 90% 2. 'ख' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 90% 3. 'ख' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 55% 4. 'ख' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 90%	1. 'ग' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 55% 2. 'ग' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 55% 3. 'ग' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 55% 4. 'ग' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 55%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/ उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों	40%	30%	20%
		(न्यूनतम अनुभाग) सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, ''क'' क्षेत्र में कुल कार्य का 40%, ''ख'' क्षेत्र में 25% और ''ग'' क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए		

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
"CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

Azadi Ka Amrit Mahotsav

G20

आपका बैंक आपके
मोबाईल स्क्रीन पर

सेंट मोबाईल ऐप के साथ बैंक कभी भी कहीं भी।

क्यूआर कोड (एंड्रॉयड / आईओएस)
स्कैन करें और अभी ऐप डाउनलोड

GIVE US A MISSED CALL FOR LOAN, DIAL **922 390 1111**

*Terms & Conditions apply

www.centralbankofindia.co.in